हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

जुलाई, 2003 वर्ष 2 अंक 5

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

— सहायक —
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2787250
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट·प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

ऐ अल्लाह के बन्दो ! तुम आपस में एक दूसरे को छोड़ न दो। बुग़्ज़ (द्वेष) न रखो, एक दूसरे पर हसद (ईर्ष्या) न करो, और भाई-भाई हो के रहो, जैसा कि अल्लाह ने तुम को हुक्म दिया।

(अबू बक्र सिद्दीक़)

अगर इस गोले ● में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया १०० रूपया जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

• सत्य स्पष्ट हो चुका है	सम्पादकीय..... 3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
• इस्लाम का चौथा स्तंभ रोज़ा	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली हसनी 7
• कश्मीर और अयोध्या की बिजली मदरसों पर क्यों गिराई जाए	मौ० अब्दुल करीम पारीख..... 10
• सुन्दर रहन सहन	ख़ैरुन्निसा बेहतर 13
• तुझसे तोडूं तो किससे जोडूं	मौ० मनाज़िर अह़सन गीलानी 14
• न्याय प्रियता के शान्दार नमूने	डा० मु० इज्तिबा नदवी..... 15
• हिन्द का विजेता मुह़म्मद बिन क़ासिम	आमिना उस्मानी..... 17
• ग़ैर मुस्लिम जिन्नों का आहार	अबू मर्ग़ूब 20
• इराक़ पर अमरीका का अधिकार मानवता की मौत	मु० रफ़ी रिसर्च फेलो..... 22
• इस्लामी अ़क़ाइद	मौ० अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी से लाभान्वित..... 24
• आपकी समस्याएं और उनका ह़ल	मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी 28
• आठ साल का बालक	मो० ह़सन अन्सारी 29
• शिष्टता की डगर पर	आसिफ़ अंज़ार नदवी 30
• सांस की बदबू का उपचार	हकीम हैदर अ़ब्बास 32
• दुरूदो सलाम	मौ० मुह़म्मद सानी ह़सनी..... 33
• तालीम मेह़नत चाहती है	मु० इस्ह़ाक 34
• ज़हीरुद्दीन बाबर	सय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रह़मान..... 37
• एक सांस और	डा० सूरज मृदुल 38
• नबी-ए-करीम की पसन्दीदा तरकारी लौकी	अमीनुद्दीन खां..... 39
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	मुईद अशरफ नदवी 40

□□□

सत्य स्पष्ट हो चुका है

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

अब से लग भग १४२३ वर्ष पूर्व सृष्टा ने अपने अन्तिम सन्देष्टा को आदेश दिया था कि घोषणा (एअ़लान) कर दो कि "सत्य आ गया और असत्य चला गया निःसन्देह असत्य तो जाने वाला था ही ।" (१७:२२)

सत्य तो सदैव से है और सदैव रहेगा वह विनाश रहित है सत्य अर्थात हक़ अल्लाह के गुणों में से एक गुण है परन्तु एक सत्य उसके व्यक्तित्व से पृथक उसकी सृष्टि भी है। यह सत्य सृष्टा ने अपनी सृष्टि के लिए रचा है और उसी सत्य को अपना कर मनुष्य सृष्टा की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है और उसी सत्य के अपनाने पर मानव का मोक्ष (नजात) आधारित है। यह सत्य जहां आता है वहां से असत्य को हटना ही पड़ता है। कोई कहे सत्य लाने वाले सत्य लाए परन्तु असत्य जमा रहा यह वैसी ही बात है कि कोई कहे कि कमरे में विद्युत राड जल रहा था और अंधेरा भी था। वास्तव में सत्य लाने वालों ने सत्य लाने की चेष्टा की परन्तु किसी कारण सत्य आ न सका सत्य आते ही असत्य का हटना आवश्यक तथा स्वाभाविक है।

इस्लाम एक सत्य है, इस्लाम सत्य धर्म है। यह पहले मनुष्य दादा आदम (अ़लैहिस्सलाम) से मानव जाति में आया और क़ियामत आने से पहले तक इस पृथ्वी पर रहेगा। जब इस्लाम पृथ्वी पर से उठा लिय जाएगा तभी क़ियामत आएगी।

इस्लाम अल्लाह का उतारा हुआ दीन है। इस दीन को अपने बन्दों तक पहुंचाने के लिए अल्लाह (ईश्वर) अपने सन्देष्टा भेजता रहा। यह सन्देष्टा (जिनकी निश्चित संख्या अल्लाह ही जानता है) लाख से ऊपर आए। यह सन्देष्टा हर काल में और हर देश में आते रहे। सम्भव है कि भारत के प्रसिद्ध ऋषि तथा अवतार सन्देष्टा ही रहे हों जिन को क़ौम ने बाद में उनको ऋषि या अवतार का नाम दे दिया हो जैसे यहूद ने उज़ैर को और नसारा ने मसीह को खुदा का बेटा कह डाला।

सब के अन्त में अल्लाह ने अपने अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजा) उन्होंने बताया कि मैं अन्तिम सन्देष्टा (आखिरी नबी) हूं मेरे पश्चात् कोई नबी नहीं आएगा। अपने नबी होने के प्रमाण में उन्होंने क़ुर्आन (अल्लाह की किताब) प्रस्तुत की। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने किसी से एक अक्षर भी न पढ़ा था फिर भी ऐसा अद्भुत क़ुर्आन प्रस्तुत किया जिसकी भविष्यवाणियां, पिछली कौमों की बातें और भाषा की शैली देखकर लोग चकित रह गये। साथ ही लोगों ने अन्तिम नबी द्वारा अद्भुत लीलाएं (मुअ़जिज़े) देखे कि वृक्ष तथा पाषाणों ने आप को अ़रबी भाषा में सलाम किया। कंकरियों तथा गोह ने आप के रसूल होने की गवाही दी। एक कटोरा दूध से दसियों लोगों ने पेट भर–भर कर पिया। एक कटोरा पानी से कई सौ लोगों ने पिया और वुज़ू किया । यह मुअ़जिज़े देखकर जिन के लिए अल्लाह ने हिदायत लिखी थी वह आप की ओर दौड़ पड़े और आप पर ईमान ले आए।

यह समस्त बातें जो ऊपर बयान हुईं हज़रत मुहम्मद (स०) और उनके सहाबा की बताई

हुई हैं। आप ने स्पष्ट बता दिया कि मुझे समस्त संसार के लिए तथा संसार के अंत तक के लिए नबी बना कर भेजा गया है। अब मेरा अनुकरण किये बिना कोई भी नजात (मोक्ष) नहीं पा सकता।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बताया कि इस जीवन के समाप्ति पर मानव के प्राण बरज़ख़ लोक में रखे जाते हैं वहां नेक लोग सुख की नींद सोएंगे जबकि बुरे लोग बड़े दुख में रहेंगे। यह कर्म क़ियामत आने तक चलेगा। क़ियामत जल थल होकर नहीं आएगी अपितु एक फ़िरिश्ता (दूत) इस्राफ़ील सूर (नरसिंघा) फूंके गे जिस की तीव्र ध्वनि से सारे जीव धारी मर जाएंगे, पहाड़ चूर–चूर होकर उड़ते फिरेंगे फिर अल्लाह के अतिरिक्त सब कुछ मिट जाएगा। फिर एक समय के पश्चात अल्लाह तआ़ला इस्राफील तथा सूर को पुनः पैदा करेंगे फिर पुनः सूर फूंका जाएगा। उसकी ध्वनि से फिर पृथ्वी सूर्य जन्नत दोज़ख आदि बन जाएंगे सभी जीव पुनः जीवित हो जाएंगे। हिसाब व किताब होकर कोई सदैव के लिए जहन्नम पाएगा कोई सदैव के लिए जन्नत। पुनर्जन्म जीवन या जन्नत का होगा या हजन्नम का। जो जन्नत पाएगा वही नजात पाएगा अर्थात उसको मोक्ष मिल जाएगा।

आवागमन का विश्वास असत्य है। मरने के पश्चात दोंबारा सूर फूंके जाने ही पर पुनः जीवन मिलेगा फिर हिसाब किताब के पश्चात शाश्वत जीवन मिलेगा सदैव की जन्नत या सदैव का जहन्नम। अलबत्ता कुछ पापी जहन्नम में थोड़े दिनों के लिए डाले जाएंगे फिर वहां से निकाल कर जन्नत में लाए जाएं गे परन्तु जन्नत से कोई भी और कभी भी न निकाला जाएगा।

यह जो बहुत से नबी हर काल में तथा हर देश में आते रहे उनकी शरीअ़त (जीवन विधान) समय के अनुकूल बदलती रही परन्तु विश्वास सब का एक था। इस्लाम का विश्वास जैसे का तैसा सुरक्षित है। अतः जिस धर्म का विश्वास इस्लाम के विपरीत हो वह इलाही विश्वास कदापि नहीं हैं। वह किसी सन्देष्टा का बताया हुआ नहीं है अपितु लोगों ने अपने भ्रम से गढ़ कर धर्म में दाखिल कर दिया है।

जिस को इस्लाम मिल गया उसने सत्य पालिया। इस्लाम लाने वालों में कर्मानुसार श्रेणियां हैं। उच्च श्रेणी वाले को अल्लाह की निकटता का उच्च स्थान मिलेगा जन्नत में वह अत्यधिक पुरस्कारित होगा परन्तु कम से कम स्तर वाला मुस्लिम भी जन्नत पाएगा। जन्नत में श्रेणिया अवश्य हैं परन्तु दुख कलेश का नाम भी नहीं है और कुर्आन घोषणा करता है कि "जो जहन्नम से बचा दिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया वह सफल हो गया।" (३:१८५)

अतः एक मुसलमान रब की निकटता पाने के लिए अधिक से अधिक उपासनाओं में लग सकता है परन्तु वह सत्य (हक़) की खोज में नहीं रहता कि सत्य तो वह पा चुका है। हां इस की भी फ़िक्र में रहता है कि कहीं शैतान उसे सत्य मार्ग से बिचला न दे।

हर पढ़े लिखे तथा इस्लाम से पूरी तरह परिचित मुसलमान का कर्तव्य है कि वह खुद अल्लाह से दुआ करता रहे साथ ही इस्लाम के सत्य को अच्छी नीति तथा अच्छे उपदेश के साथ दूसरे इन्सानों तक पहुंचता रहे। हमें चाहिए कि अच्छे ढंग से सहानुभूति के साथ अपने भाई को जहन्नम की आग से बचाने तथा अल्लाह की प्रसन्नता और उसके पुरस्कार दिलाने के उद्देश्य से अपने भाई के सामने इस्लाम को प्रस्तुत करें अल्लाह से दुआ भी करें। हमारा और आप का काम इतना ही है आगे अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से फ़रमा दिया: "आप कह दीजिए कि यह कुर्आन अल्लाह की ओर से उतारा गया है जिस का जी चाहे ईमान लाए जिसका जी चाहे इन्कार करे हमने इन्कार करने वाले अत्यचारियों के लिए जहन्म की आग तैयार कर रखी है।" (१८:२६) और फ़रमाया :– "जिसे आप चाहें उसका हिदायत पाना ज़रूरी नहीं लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।" (२८ : ५६)

कुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

बीमार के साथ व्यवहार :

बीमार के सम्बन्ध में कुर्आन मजीद में बताया गया – "और न बीमार पर कोई तंगी (संकीर्णता) है।

(सूरतन्नूर :६१)

बीमार के लिए अल्लाह ने बड़ी आसानी कर दी है, अगर पानी से नुक्सान का डर है तो वुजू मुआफ़ है अर्थात तयम्मुम करले, जिहाद इन के लिए आवश्यक नहीं, रोज़ा क़ज़ा कर सकते हैं। खड़े हो कर नमाज न पढ़ सकें तो बैठकर और बैठने की भी ताक़त न हो तो लेट कर इशारों से नमाज़ अदा कर सकते हैं।

अल्लाह तआला ने जिस प्रकार अपने आदेशों में बीमार के लिए आसानियां पैदा कर दी हैं इसी प्रकार बन्दों को भी बीमारों के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच हक हैं उनमें से एक यह है कि जब वह बीमार पड़े तो वह उसकी अियादत (इयादत) करे अर्थात उस का हाल पूछने जाए। बीमार की देखभाल, खिदमत और तीमारदारी को अियादत कहते हैं।

फ़रमाया जब कोई सुब्ह को किसी बीमार की अियादत करता है तो शाम तक फ़िरिश्ते उस के लिए अल्लाह से क्षमा मांगते रहते हैं। और जब शाम को कोई अियादत करता है तो फ़िरिश्ते उसके लिए सुब्ह तक क्षमा मांगते रहते हैं।

फरमाय जब कोई किसी बीमार की अियादत को जाता है तो वापसी तक वह जन्नत के मेवे चुन्ता रहता है। एक बार फ़रमाया कि अल्लाह तआला कियामत में फ़रमाएगा कि ऐ आदम के बेटे मैं बीमार पड़ा तूने मेरी अियादत न की वह कहेगा, ऐ मेरे परवरदिगार (पालनहार) तू सारे जहां (समस्त जगत) का पालनहार था मैं तेरी अियादत कैसे करता? अल्लाह तआला फ़रमाएगा, क्या तुझे खबर न हुई कि मेरा फ़ुलां बन्दा बीमार था? मगर तूने उसकी अियादत न की। अगर तू उसकी अियादत करता तो तू मुझे उसके पास पाता।

हज़रत सअद बिन मआज़ जब ज़ख़्मी हुए तो आप ने उनका ख़ेमा मस्जिद में लगवाया ताकि बार बार उनकी अियादत की जा सके।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों और मुनाफ़िकों की अियादत फरमाई। इससे ज्ञात हुआ कि गैर मुस्लिम की भी अियादत करना चाहिए।

ईश वाणी

तुमको जो कुछ इस दुनिया में दिया गया है वह इस चार दिन के सांसारिक जीवन बिताने के लिए दिया गया है और जो बदला तथा पुरस्कार (तुम्हारे सदैव वाले जीवन के लिए) अल्लाह के पास है वह बहुत ही अच्छा तथा टिकाऊ है। परन्तु वह उन्हीं लोगों के लिए है जो (अपने ख़ालिक (रचयिता) व मालिक को मानकर उस पर) ईमान ला चुके हैं और उसी पर भरोसा रखते हैं और बड़े गुनाहों से बचते हैं और गन्दी बातों तथा गन्दे कामों से भी बचते हैं और जब उनको (किसी की ग़लती पर गुस्सा आ जाता है और वह अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा होता है तो उसको) क्षमा कर देते हैं। यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब के आदेश मान लिये वह नमाज़ के पाबन्द हैं और (जिस काम का आदेश सीधे कुरआन या हदीस में न हो ऐसे कामों में विद्वान लोग) परस्पर परामर्श करते हैं (और किताब व सुन्नत के प्रकाश में उस काम का आदेश निकाल लेते हैं) और हमने (अल्लाह ने) उनको जो कुछ दिया है उसे भले कामों में खर्च करते हैं। वह ऐसे लोग हैं कि जब उनपर कोई ज़ियादती करता है तो उससे बराबर बदला लेते हैं। किसी ज़ियादती या बुराई का बदला उसी तरह के ज़ियादती या बुराई है लेकिन अगर कोई बदला न ले क्षमा कर दे और सुल्ह कर ले तो उसको उसका सवाब अल्लाह तआला से मिलेगा। निःसन्देह अत्याचार को नापसन्द करता है परन्तु जो अपने पर किये गये जुल्म का बदला ले तो ऐसे लोगों पर कोई दोष नहीं। दोष तो केवल उन लोगों पर है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और संसार में अति करते हैं। ऐसे लोगों के लिए कष्टदायक दण्ड हैं और जो व्यक्ति सब्र करे और क्षमा करे निःसन्देह यह काम ऊंचे कामों में से है। (देखिये शूर–ए–शूरा, आयत ३६ : ४३)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

कुछ मौक़ों पर मोमिन की मदद ज़रूरी हो जाती है –

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह और अबू तल्हा बिन सहल अन्सारी (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया जो शख्स भी किसी मुसलमान को ऐसी जगह बेसहारा छोड़ देगा जहां उसकी बेइज़्ज़ती हो रही हो और उसकी इज्ज़त व आबरू पर धब्बा लगाया जा रहा हो तो अल्लाह तआला उस शख्स को ऐसी जगह बे सहारा छोड़ देगा जहां वह उसकी मदद का तलबगार होगा और जो शख्स भी किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करेगा जहां उसकी इज़्ज़त पामाल हो रही हो और उसकी इज़्ज़त पर पर्दा डाला जा रहा हो तो अल्लाह तआला भी उसकी मदद ऐसी जगह फ़रमाएगा जहां उसकी मदद उस बन्दे को ज़रूरत होगी। (अबूदाऊद)

१०६. मोमिन की अजमत (सम्मान)– हज़रत नाफेअ़ रह० से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि०) ने अल्लाह के घर की ओर या यह फ़रमाया कि कअ़बः की ओर देखा और फ़रमाया तुम्हारी क्या बड़ाई है और तुम्हारी हुरमत कितनी बढ़ी हुई है। मोमिन अल्लाह के नज़दीक तुम से ज़ियादह मुहतरम है। (तिर्मिज़ी)

१११. सदकः व खैरात में मालदारों का हक़ नहीं है –

हज़रत उबैदुल्लाह बिन अदी (रजि०) से रिवायत है कि दो आदमियों ने उनसे बयान किया कि वह दोनों रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुए और दोनों ने सदकः व खैरात मांगा, आप (सल्ल०) ने नज़र डालकर ऊपर से नीचे तक देखा तो आप (सल्ल०) ने उनको तन्दुरुस्त महसूस किया फिर आप (सल्ल०) ने उनसे फ़रमाया तुम चाहो तो मैं तुम को दे दूं (मगर यह समझ लो कि) मालदारों और तन्दुरुस्त (हट्टा कट्टा) लोगों का इसमें हिस्सा नहीं है। (अबूदाऊद व नसई)

११२. यतीम के माल को तिजारत करके बढ़ाना चाहिए – हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया जो किसी यतीम का वली बने उसको चाहिए कि इस यतीम के माल को तिजारत करके बढ़ाता रहे, ऐसा न करे कि उसको बढ़ाए नहीं और सदक़ः देते देते उसका माल खत्म हो जाए। (तिर्मिज़ी)

११५. मुहाजिरीन का तिजारत और अन्सार का खेती बाड़ी करना –

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फरमाते हैं, कि तुम लोग कहते हो, कि अबू हुरैरा, रसूलुल्लाह सल्ल० की हदीसें बहुत कसरत से बयान करता है। क्या बात है कि मुहाजिरीन व अन्सार अबूहुरैरा की तरह रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की हदीसें बयान नहीं करते तो वजह उसकी यह है कि मुहाजिरीन तिजारती कारोबार के सिल्सिले से बाज़ारों में मशगूल रहते थे, और मैं हर चीज़ से फारिग होकर हुजूर (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर रहता था वह ग़ैर हाज़िर रहते मैं हाज़िर रहता था, वह भूल जाते मैं याद कर लेता और मेरे अन्सार भाइयों को अपनी खेती बाड़ी से फुर्सत न मिलती और मैं सुफ्फा के फ़कीरों में से एक फक़ीर था, जब वह भूल जाते तो मैं याद रखता। (बुख़ारी)

११८. मकरूज़ से मुतालबा करने में नर्मी और ख़रीद व फ़रोख़्त में सख़ावत–

हज़रत हुजैफ़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह का एक बन्दा जिसको अल्लाह ने माल दिया था, अल्लाह तआ़ला के पास हाज़िर किया गया अल्लाह तआ़ला ने उससे फरमाया कि तू ने दुन्या में क्या–क्या अमल किये, फिर आपने यह आयत पढ़ी (अल्लाह से कोई बात न छुपा सकेंगे) वह बन्दा अर्ज़ करेगा कि तूने मुझको माल दिया तो मैं लोगों के खरीद व फरोख्त के वक़्त नर्मी और सखावत से काम लेता था, मालदार से आसानी का बरताव करता था और गरीब को मुहलत देता था अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मैं तुमसे ज़ियादा दरगुज़र का हक़ रखता हूं, फिर फ़रमाएगा, मेरे बन्दे को दरगुजर करो, उक़बा बिन आमिर और अबूमसऊद अन्सारी (रज़ि०) ने कहा कि हमने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) से इसी तरह सुना है। (मुस्लिम)

१२२. पेड़ पौधे और खेती बाड़ी में लाभ ही लाभ –

हज़रत अनस बिन मालिक

(शेष पृष्ठ १२ पर)

इस्लाम का चौथा स्तम्भ रोज़ा

मौलाना सय्यिद अबुल हसन अ़ली हसनी

रोज़े के हुक्म

मुसलमानों पर रोज़ा हिजरत के बाद उस समय फ़र्ज़ किया गया जब उन पर सख़्तियों के बादल छंट गये, ग़रीबी और तंगदस्ती का दौर ख़त्म हुआ और मुसलमानों ने मदीना में इत्मिनान की सांस ली और उनकी ज़िन्दगी आराम से बसर होने लगी। ऐसा शायद इसलिए हुआ कि अगर परेशानी के दिनों में रोज़े का हुक्म नाज़िल होता तो बहुत से लोग इसको मजबूरी का रोज़ा समझते और यह महसूस करते कि रोज़ा केवल ग़रीबों और पीड़ित लोगों के लिए है, अमीरों और खुशहाल लोगों के लिए, जो बाग़ों और जमीनों के मालिक हैं, नहीं।

कुरआन मजीद में सूरः बक़रः की आयत १८३–१८५ में रोज़े का हुक्म नाज़िल हुआ :

अनुवाद – 'ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फर्ज़ किये गये जैसा कि उन लोगों पर फर्ज़ किये गये थे जो तुमसे पूर्व हुए हैं ताकि तुम परहेजगार बन जाओ। वह भी गिनती के चन्द रोज़ के हैं। फिर तुममें से जो व्यक्ति बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों (में रोज़े रखकर) गिनती पूरी कर दे और जो लोग इसे मुश्किल से बर्दाश्त कर सकें उनके ज़िम्मे फ़िद्यः है (कि वह) एक ग़रीब का खाना है और जो कोई खुशी–खुशी नेकी करे उसके हक़ में बेहतर है और अगर तुम समझो तो बेहतर तुम्हारे हक़ में भी है कि तुम रोज़े रखो, रमज़ान के महीनों में कुरआन उतारा गया है वह लोगों के लिए हिदायत है, और (उसमें) खुले हुए (तर्क हैं) हिदायत और बुराई और भलाई के अन्तर करने के खुले हुक्म मौजूद हैं। सो तुम में से जो कोई इस महीने को पाये, लाज़िम है कि वह (महीना भर) रोज़ा रखे और जो कोई बीमार हो या सफर में हो तो (उस पर) दूसरे दिनों का शुमार रखना (लाज़िम) है। अल्लाह तुम्हारे हक़ में सहूलत चाहता है, और तुम्हारे हक़ में दुशवारी नहीं चाहता है और यह कि तुम गिनती को पूरा कर लिया करो और अल्लाह की बड़ाई किया करो, इस पर कि तुम्हें राह बता दी, अजब नहीं कि तुम शुक्रगुजार बन जाओ''।

यह आयतें ईमान व अ़क़ीदा (आस्था), अ़क़्ल व अन्तःकरण सबको अपील करती हैं और बलवान बनाती हैं और सहर्ष रोज़ों के स्वागत के लिए वातावरण को अनुकूल बनाती है।

रोज़े का हुक्म कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसका उद्देश्य अकारण मशक्कत और आज़माइश में डालना हो, यह साधना, प्रशिक्षण, सुधार, तपाने और माझने के लिए है। यह वास्तव में नैतिक दीक्षा निकेतन है जहां से आदमी परिपूर्ण होकर इस प्रकार निकलता है कि इच्छाओं की लगाम उसके हाथ में होती है, इच्छाएं उस पर शासन नहीं करतीं वही इच्छाओं पर शासन करता है। जब वह मात्र अल्लाह के हुक्म से अवर्जित और पवित्र चीज़ों को त्याग देता है तो वर्जित चीज़ों से बचने का प्रयास क्यों न करेगा ? जो पवित्र व्यक्ति ठंडे मीठे पानी और पवित्र व स्वादिष्ट खाने को ईश्वर के आज्ञापलन में छोड़ सकता है, वह हराम व वर्जित तथा अपवित्र चीज़ों की तरफ़ नज़र उठा कर देखना कैसे गवारा कर सकता है। ''ताकि तुम परहेजगार बन जाओ'' में यही भाव निहित है। आगे कहा गया है कि महीनों की गिनती ज़ियादह न समझना, यह तो चन्द गिने चुने दिन हैं जो देखते ही देखते खत्म हो जाते हैं।

रोज़े की विशेषताएं और उसका महत्व

इस्लाम में रमज़ान का पूरा महीना जिसमें कुरआन नाज़िल हुआ है, रोज़ों के लिए निश्चित है जिसके दिनों में रोज़ा रखने का हुक्म है और रातों को खाने पीने की इजाज़त है। हज़रत अबू हुरैरः (रज़ि०) ने बयान किया है कि हमारे नबी सल्ल० ने फरमाया, ''रमज़ान में आदम की औलाद का हर अ़मल (कर्म) कई गुना बढ़ा दिया जाता है, अन्य नेकी दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक बढ़ा दी जाती है। अल्लाह तआला फरमाता है कि सिवाय रोज़े के इसलिए कि बेशक वह खास मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा मेरी खातिर अपना खाना और अपनी वासना सब छोड़ देता है। रोज़ेदार के लिए दो खुशियां हैं – एक इफ़तार के समय और एक अपने रब से मुलाकात के समय। और बेशक रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के

नजदीक मुश्क (कस्तूरी) से ज़ियाद अच्छी और पाकीज़ा है।"

सलह बिन सअ़द बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसका नाम "रय्यान" है इसके लिए केवल रोज़ेदार बुलाये जायेंगे, जो रोज़ेदारों में से होगा वही उसमें दाखिल होगा और जो उसमें दाख़िल हो जायेगा वह कभी प्यासा न होगा।"

रमजान के महीने में रोज़ा फ़र्ज़ करने के कुछ कारण है। सबसे बड़ा कारण यह है कि रमज़ान ही वह महीना है जिसमें कुरआन मजीद नाज़िल हुआ, और भटकी हुई मानवता को भोर नसीब हुआ। इसलिए यह सर्वथा उचित था कि जिस प्रकार भोर के रोज़े की शुरूआत होती है उसी प्रकार इस महीने को भी जिसमें एक लम्बी और अन्धेरी रात के बाद पूरी मानवता की सुबह हुई, पूरे महीने के रोज़े के साथ सम्बद्ध कर दिया जाये। विशेषकर इसलिए और भी कि अपनी रहमत व बरकत, आध्यात्मिक और आन्तरिक शुद्धता के लिहाज से भी यह महीना तमाम महीनों में अफ़ज़ल (उत्कृष्ट) था और इसके दिनों को रोज़े से और रातों को अ़िबादत से सुसज्जित करना सर्वथा उचित था।

रोज़ा और कुरआन का घनिष्ट सम्बन्ध है। ह० मुहम्मद सल्ल० रमज़ान में कुरआन का अधिक पाठ करते थे। इब्ने अ़ब्बास बयान करते हैं कि हमारे नबी सल्ल०सबसे ज़ियादा सख़ावत (उदारता) और बढ़ जाती। जिबरईल रमज़ान में हर रात में आपके पास आते और कुरआन का पाठ करते। जिबरईल से मुलाकत के काल में सख़ावत और नेकी में तेज़ हवा से भी ज़ियादह तेज़ नज़र आते।

अ़िबादत का विश्वव्यापी मौसम और सतकर्मों की बहार

इन तमाम चीज़ों ने रमज़ान के अ़िबादत, जाप व कुरआन के पाठ और परहेज़गारी का एक ऐसा विश्वव्यापी मौसम प्रदान कर दिया है जिसमें पूरब से पश्चिम के तमाम मुसलमान, पढ़े लिखे और अनपढ़, अमीर व ग़रीब, कमजोर और ताकतवर हरवर्ग के लोग एक दूसरे के साथी और दोस्त नज़र आते है। यह रमज़ान एक ही समय में हर शहर,, गांव, हर देहात में होता है। अमीर के महल और ग़रीब की झोपड़ी दोनों में व्याप्त होता है। फलतः न कोई व्यक्ति स्वयं अपना बखान करता है न रोज़े के लिए कोई छीना छपटी और झगड़ा पैदा होता है। इसे पूरी दुन्या में देखा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे इस्लामी समाज पर रमज़ान में चैन सुख का ज्योतिर्मय कोई शामियाना तान दिया गया है। जो लोग रोज़े के मुआमले में कुछ सुस्त और काहिल हैं वह भी आप मुसलमानों से अलग होने के डर से रोज़ा रखने पर मजबूर होते हैं और अगर किसी वजह से रोजा नहीं रखते तो छिप कर और शर्म के साथ खाते हैं, सिवाय कुछ नास्तिकों और झूठों के जिनको एलानिया भी इस बेशर्मी में कोई संकोच नहीं होता है, अथवा उन बीमारों और मुसाफ़िरों के जिन को शरिअ़त ने छूट दी है। यह एक सामूहिक और विश्वव्यापी रोज़ा है जिससे स्वतः एक ऐसा माहौल पैदा हो जाता है जिसमें रोज़ा आसान मअ़लूम होता है, दिल नर्म पड़ जाते हैं और लोग अ़िबादत, नम्रता, हमदर्दी व सहृदयता के कामों की ओर स्वतः आकर्षित हो जाते हैं।

पिछले पहर उठकर सहरी खाना

रात को सुबह सादिक़ (भोर) से पहले पहले (रोज़े की ताक़त पैदा करने के लिए ताकि भूख प्यास ज़ियादा न सताये) कुछ खा लिया जाता है इसको "सहरी" कहते हैं। यह सुन्नत भी है और इस पर ज़ोर भी दिया गया है। हमारे नबी सल्ल० ने फरमाया, "सहरी खाओ इसलिए कि सहरी में बरकत है।" आपने इफ्तार में देरी करने से मना फ़रमाया है। आप का दस्तूर यह था कि नमाज़ से पहले इफ़तार करते, चन्द तर–खजूरें अगर मौजूद होतीं खाते अगर न मिलतीं तो सूखी खजूरें खा लेते अन्यथा पानी के चन्द घूंट पी लेते।

रोज़े का सार और उसकी सुरक्षा

इस्लामी शरीअ़त ने रोज़े के वाह्य स्वरूप के साथ उसके सार व हक़ीकत पर भी बल दिया है। उसने रोज़ेदार के लिए रोज़े की हालत में केवल खाने पीने और संभोग ही को हराम नहीं किया बल्कि हर उस चीज़ को वर्जित किया है जो रोज़े के उद्देश्यों के विपरीत और उसकी हिक़मतों के लिए हानिकारक है। उसने रोज़े को विनय व परहेज़गारी, दिल व ज़बान की पवित्रता के घेरे में घेर दिया है। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुममें से कोई रोज़े से हो तो न बकवास करे न शोर व शरारत करे, अगर कोई उसको गाली दे और लड़ने – झगड़ने पर आमादा हो तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, " जिसने

झूठ बोलना और उसपर अमल करना न छोड़ा तो अल्लाह को इसकी कोई जरूरत नहीं कि वह अपना खाना–पीना छोड़े।"

वह रोजा जो परहेज़गारी से खाली हो वह ऐसा है, जैसे आत्माविहीन शरीर। नबी सल्ल० ने फरमाया, "कितने रोज़ेदार हैं जिनको उनके रोज़े से सिवाय भूख प्यास के कुछ हाथ नहीं लगता और कितने ऐसे अ़िबादतगुजार हैं कि जिनको आपने क़ियाम में रात जागने के सिवा कुछ नहीं मिलता।" आप ने फ़रमाया, "रोज़ा ढाल है जब तक उसको फाड़ न डाला जाये।"

इस्लामी रोज़ा केवल कुछ चीज़ों से मनाही करने का नाम नहीं, जिसमें केवल खाने पीने, ग़ीबत, चुगलखोरी, लड़ाई– झगड़े और गाली– गलौज से मना किया गया हो, वह बहुत सी ऐसी बातों का भी मजमुआ (संकलन) है जिन्हें करने के लिए कहा गया है। यह अ़िबादत, तिलावत (कुरआन का पाठ), जाप, अल्लाह की याद, हमदर्दी व सहृदयता और ग़रीबों की मदद करने का ज़माना है। नबी सल्ल० ने फ़रमाया, "इसमें जो किसी एक कार्य से ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करना चाहेगा वह दूसरे दिनों के फ़र्ज़ की अदायगी के बराबर समझा जायेगा और जो इसमें फर्ज अदा करेगा वह उसकी तरह होगा जो अन्य दिनों में सत्तर फर्ज़ अदा करे। यह सब्र (धैर्य) का महीना है और सब्र का बदला जन्नत है और ग़मख़्वारी (सहृदयता) का महीना है।" आपने फ़रमाया "जो रोज़ेदार को इफ्तार कराये उसको रोज़े के बराबर बदला मिलेगा और रोज़ेदार के सवाब के सवाब में कोई कमी नहीं की जायेगी।" रोज़े के महीनों में तरावीह की नमाज़ पढ़ी जाती है। नबी सल्ल० ने तीन दिन तरावीह की नमाज़ पढ़कर उसको इसलिए छोड़ दिया था कि कहीं इस उम्मत पर फर्ज़ न हो जाये और मशक़्क़त का कारण बने।

इन सब चीज़ों ने मिलकर रमज़ान को जश्ने आ़म, तिलावत का मौसम और परहेज़गारों के हक़ में बहार (बसन्त) का मौसम बना दिया है। इसमें मुसलमान की धार्मिक भावना, अ़िबादत का शौक़, और धर्म के प्रति आस्था पूरी तरह प्रकट हो जाती है और उसके दिलों की नरमी, उनकी तौबा, ईश्वर से लगाव, प्रायश्चित की भावना और नेक कामों में एक दूसरे से आगे निकलने की भावना अपनी चरम सीमा पर होती है।

एतिकाफ़

रमज़ान की अन्तिम दहाई में एअ़तिकाफ़ बड़े सवाब का काम है यह एक प्रिय सुन्नत भी है और रमज़ान के उद्देश्य की पूर्ति का अवसर भी इससे प्राप्त होता है। एतिकाफ़ के दौरान मस्जिद में रहकर और एक प्रकार से अल्लाह के दर पर पड़े रहकर नमाज़, तिलावत, अल्लाह की याद, तस्बीह, तकबीर, तहमीद, तौबा व इस्तिग़फार और नबी सल्ल० पर दुरूद में व्यस्त रहना मुस्तहब है।

एतिकाफ़ की हालत में पेशब, पाख़ाना और नापाक हो जाने पर नहाने के अलावा मस्जिद से बाहर जाना मना है वुजू भी मस्जिद ही की सीमा में किया जाय।

ह० मुहम्मद सल्ल० रमज़ान की अन्तिम दहाई में बराबर एतिकाफ़ फ़रमाते थे।

शबे क़द्र

अल्लाह ने अपनी ह़िकमत से शबे कद्र को रमज़ान की अन्तिम दहाई में निहित कर रखा है ताकि मुसलमान इसकी तलाश में रहें उनकी तलब और हिम्मत बढ़े और शबेक़द्र पा लेने के लालच में रमज़ान की आख़िरी रातें अ़िबादत और दुआ़ में गुजारें। नबी सल्ल० जब रमज़ान की अन्तिम दहाई शुरू होती थी, पूरी रात जागते थे, और अपने घर वालों को भी जगाते थे और कमर कस लेते थे। आपने फ़रमाया, "शबेक़द्र रमज़ान की अन्तिम दहाई की ताक़ रातों में तलाश करो।"

अनुवाद – "बेशक हमने इसे (कुरआन को) शबेकद्र में उतारा है, और आपको खबर है कि शबेकद्र है क्या ? शबेक़द्र हज़ार महीनों से बढ़कर है। इस रात फ़िरिश्ते और रूहुलकुद्स उतरते हैं अपने पालनहार के हुक्म से हर अच्छी बात के लिए सलामती (ही सलामती) है वह रहती है सुबह होने तक।"

अ़ीद के चांद पर रमज़ान ख़त्म हो जाता है

दिन गुज़रते देर नहीं लगती और २९–३० की औक़ात ही क्या। अभी अ़िबादत के मतवालों का जी भी नहीं भरा की चांद रात आ गई। रमज़ान ने चलने की तैयारी की और अगले साल फिर आने का वअ़दा कर के मुसलमानों से विदा ली। अ़ीद का चांद निकल आया। खुदा का एक मेहमान रूख़्सत हुआ दूसरा मेहमान आया, वह भी हुक्म था कि यह भी हुक्म। आज तक दिन में रवाना गुनाह था, कल दिन में न खाना गुनाह होगा।

कश्मीर और अयोध्या की बिजली

मदरसों पर क्यों गिराई जाए

मौ0 अब्दुल करीम पारिख

मैं इस रुख़ पर भी बात करूंगा कि हमारे समाचार वालेभाई भी और कुछ राजनीतिज्ञ पार्टियां जो बाबरी मस्जिद के कारण मुसलमानों को तीखी नज़र से देखती हैं, यह समस्या और उलझ कर रह गई है। अयोध्या या कश्मीर की मसस्या के कारण बेगुनाह मदरसों और शिक्षा संस्थाओं को निशाना बनाना, उन पर आरोप लगाना क्यों सही नहीं है। वह बेचारे इस पोजीशन में नहीं हैं कि सबके सामने अपनी बेगुनाही बयान कर सकें, और बहुतों को तो मालूम भी नहीं है कि उन के ख़िलाफ़ देश में क्या प्रोपगण्डा हो रहा है। उनको मालूम नहीं कि बाहर क्या हो रहा है और उनके खिलाफ़ क्या अफ़वाह फैलाई जा रही है। और इन बेचारे अफ़वाह फैलाने वालों को भी मदरसों के बारे में कुछ मालूम नहीं कि मदरसा क्या है और उसमें क्या होता है ? बस सुनी सुनाई और मन गढ़ंत बात कह भी देते हैं और लिख भी देते हैं। इसलिए मैंने ज़रूरी समझा कि खुलासा करूं। आप के सामने हिन्दुस्तान में पांच से सात लाख मस्जिदें हैं। मस्जिदों में भी छोटे–छोटे मदरसे लगते हैं, मुहल्ला और पड़ोस के छोटे बच्चे सुबह शाम आकर पढ़ते हैं और अपने घर चले जाते हैं और उनके अतिरिक्त छोटे बड़े मदरसों की व्यवस्था अलग से भी है। वह अपने खर्च खुद से निकलते हैं। यह आम मुसलमानों के चन्द्र से चलते हैं, खर्च और आमदनी का हिसाब किताब भी रखते हैं। सरकारी आडीटरों से हिसाब को आडिट भी करते हैं।

किसी भी मदरसा या मस्जिद में आतंकवाद का कोई सवाल ही नहीं :–

हां मदरसों में हम इस पर बल देते हैं कि खाने पीने का प्रबन्ध अच्छा हो, अध्यापकों का वेतन अच्छा हो, सफ़ाई सुथराई अच्छी हो, बच्चों की पढ़ाई लिखाई शिक्षा दीक्षा अच्छी हो लेकिन किसी भी मदरसे या मस्जिद के अन्दर कोई आतंकवादी केन्द्र या कोई ऐसा काम हो रहा हैं जो हिन्दुस्तान या हिन्दुस्तानी अवाम के फ़ाइदे के ख़िलाफ़ हो, ऐसा कुछ नहीं है । यदि ऐसे मदरसे या मस्जिद हों तो हम खुद अपने हाथों से इस मदरसा और मस्जिद को ढा देंगे। एक बार नागपुर के एक बड़े आदमी ने समाचार पत्र में छापा कि नागपुर में ६४ मील की दूरी पर एक मस्जिद है जो आतंकवादियों का अड्डा है। और वहां बम बनाने का कारखाना है यह खबर पढ़कर मैं उनके दफ़्तर गया और उनसे कहा कि आप चलिये मेरे साथ पहले तो ६४ मील दूर पर कोई मस्जिद या मदसा ही नहीं है। और अगर हो तो हम आप देख लेते हैं और जुर्म साबित होजाने पर हम उस की ईंट से ईंट खुद मुसलमानों से बजवा देते हैं। वह कहने लगे मौलाना आप कह रहे होंगे तो नहीं होगा और मैं आप की बात सच मानता हूं। रिपोर्टर से ग़लती हो गई बिना जांच के इस ख़बर को छाप दिया मैं इस का खण्डन छाप दूंगा। दूसरे दिन समाचार पत्र में इस ख़बर का खण्डन आ गया कि नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। लिकिन जो बदगुमानी हो गई कि सड़क पर किसी को गाली दीजिए और गली में माफ़ी मांगिए इस से अच्छा तो यह होता कि समाचार बिना जांच के छापे न जाएं।

हीरे मोती को पत्थर साबित न कीजिए

इस अवसर पर यह कहूंगा कि कुर्आन मजीद ने (ऐसे सझदार लोगा जो फ़सादियों को ज़मीन में ऊधम मचाने से रोकते हैं ११६–११) कहा है यह लोग जब जमीन में फ़साद होने लगे और एक दूसरे के खिलाफ़ जत्था बन्दी और आरोप लगाया जाए तो यह घर से बाहर निकल कर फ़सादियों का हाथ क्यों नहीं पकड़ते, अपराध करने वालों को अपराध करने से क्यों नहीं रोकते। मैं तो कहूंगा सिखों से, जैनियों से हिन्दू भाइयों से, आर०एस०एस०वालों से कि आप पढ़े लिखे और समझदार लोग हैं, हम से मिलें और बताएं कि किस मदरसे और मस्जिद के अन्दर आतंकवादी रहते हैं। वहां चल कर घंटा दो घंटा बैठें देखें क्या हो रहा है। इस अवसर पर मैं अपने आलिमों से भी

कहूंगा कि खुद उन की ग़लती है कि वह मदरसे के पास पड़ोस में रहने वाले हिन्दू भाइयों को मदरसे में बुलाते नहीं। पढ़े लिखे समझदार आदमी हैं, कोई वकील साहब हैं, कोई कार्पोरेशन के मेम्बर हैं, किसी समाचार पत्र के पत्रकार या ज़िम्मेदार हैं उनसे सम्पर्क रखें, उन को अपने यहां बुलाएं, उनके यहां जाएं। एक दूसरे को देखें, दिखाएं मगर वह दरवाजा खोल कर बाहर ही नहीं निकलते। यह हमारे आलिमों की ग़ल्ती ज़रूर है लेकिन अब हम इस कमी को इंशाअल्लाह दूर कर रहे हैं। हिन्दुओं में जो समझदार और जिम्मेदार लोग हैं उन्हें किसी मौक़े पर मदरसे में बुलाया जाए, वह अध्यापकों से भी मिलें पढ़ने वाले बच्चों से भी मिलें। जब मिलेंगे तो उन्हें मदरसों के यह लोग हीरे मोती दिखाई देंगे।

मैं मदरसे वालों और उनके आस पास रहने वाले हिन्दू भाइयों से अपील करता हूं कि अरबी मदरसों का वजूद कोई ढ़की छुपी बात नहीं है। यही हाल मस्जिदों का भी है कि पांच वक्त अज़ान व नमाज़ होती है। अज़ान सुनकर ईमान वाले मस्जिद में नमाज़ को आते हैं। जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ कर घरों को चले जाते हैं।

नसीहत और बन्दगी : फिर मुसलमानों में हर जगह दस फ़ीसद भी नमाज़ी नहीं हैं, सरकार के लिए क्या कठिनाई है कि कोई सी०ई०डी० या कोई और ज़िम्मेदार चुपके से मस्जिद में आ जाए और देख ले कि मस्जिद में क्या हो रहा है और कहां आतंकवादी छुपे हुए हैं ? या कहां आतंकवादियों का कैम्प चल रहा है ?

बेसिर पैर का आरोप : मदरसों के बारे में बे सिर पैर की बातें कही जाती हैं, लांछन वाली बातें होती हैं। मुसलमानों की ऐसी बड़ी संख्या जो हिन्दुस्तान में बस्ते हैं हिन्दुस्तान को ही अपना वतन समझते हैं उन पर भरोसा न करना, सुनीसुनाई ख़बरों या फिर जान बूझ कर अफ़वाहें फैलाकर उ के हौसले को घटाने से देश को हानि पहुंचेगी। बड़े–बड़े मदरसों के परिसर में भारत सरकार के पोस्ट आफ़िस खुले हैं और भारतीय स्टेट बैंक की शाखाएं भी खुली हुई हैं, अध्यापकों और कर्मचारियों और हज़ारों विद्यार्थियो के खाते खुले हुए हैं। बाहर के लोग भी इन सुविधाओं से लाभ उठाने के लिए मदरसों में आते जाते हैं वह आतंकवादियें के अड्डे या केन्द्र कैसे हो सकते हैं।

बड़े बड़े लोग मिलने के लिए आ रहे हैं :

मैं ने हज़रत मौलाना अली मियां साहब के ज़माने में देखा है कि नदवा में इन्दरा जी मिलने के लिए चली आ रही हैं, नरायनदत्त तिवारी चले आ रहे हैं, गौवर्नर, मिनिस्टर चले आ रहे हैं, आखिरी ज़माने में मम्ता बनरजी, मुलायम सिंह यादव आरहे हैं, ऐसे छोटे–बड़े मदरसे हैं जहां बड़े बड़े लोग और सरकारी अफ़सरान और ज़िम्मेदारान आते जाते रहते हैं, बैठते हैं, उलमा से बातें करते हैं, देवबन्द मदरसा वहां भी दिन भर लोग आते जाते रहते हैं। इसी प्रकार और बहुत से बड़े–बड़े मदरसे उत्तरी तथा दक्षिणी भारत में हैं जहां बाहरी देशों के लड़के दीन की शिक्षा लेने आते हैं और हिन्दुस्तानी मदरसों से सनद और सर्टिफ़िकेट लेते हैं जिससे हमारे देश का सारी दुन्या में नाम रौशन होता है इसलिए हम अल्लाह की बड़ाई करते हुए बोलते हैं, कि मुस्लिम उम्मत से और क़ौम से भारत को लाभ पहुंचेगा और देश का नाम रोशन होगा अतएव उनके बारे में रोज़ाना समाचार पत्रों में आतंकवाद और दहशतगर्द और इधर उधर की अफ़वाहें फैलाना उचित नहीं है।

मदरसों को बन्द रकने की बात कहते हैं :

बाज़ लोग मदरसों को बन्द कर देने की बात करते हैं। यह बचकानापन है। जो मदरसे वाले लाखों यतीम बच्चों और गरीब बेसहारा लड़कों को पढ़ाते, लिखाते, खाना खिलाते हैं, उनको रहने सहने, दवा इलाज का प्रबन्ध कराते हैं, उन मदरसों को यदि बन्द कर दें तो उनमें पढ़ने वाले बच्चों का पढ़ना लिखना और अच्छे इंसान का बनना तो दूर की बात है सरकार क्या उनको दो वक़्त का खाना खिला सकेगी ? उनको पढ़ना लिखना सिखा सकेगी ? आज़ादी के पचास साल से अधिक गुज़र चुके हैं क्या हुकूमत पूरे हिन्दुस्तान को पढ़ना लिखना सिखा चुकी है ? सबको रोज़गार दे सकती है ? जब कि करोड़ों रूपये पढ़ने पढ़ाने और साक्षरता मिशन पर ख़र्च होता है और बहुत सारी सरकारी स्कीमें बनती हैं फिर भी क्या हुकूमत सब के लिए या अधिकांश लोगों के लिए शिक्षा का प्रबन्ध कर सकती है ?

ऐसी सूरत में मदरसों के उलमा का अपमान करना एक तरह का पाप है। इस समय अरबी मदरसों के बारे में जो तीखी भाषा प्रयोग हो रही है, कुछ नाम के जिहादी उठ खड़े हुए हैं और

उसमें उन्होंने इस्लाम को घसीटा, भ्रम के कारण बहुत से लोगों ने इस्लाम के साथ आंतकवाद और दहशतगर्दी को जोड़ दिया और अरबी मदरसों को इस का अड्डा और केन्द्र बताने लगे। अब यह काम सरकार का है कि वह आतंकवाद से निपटे और जनता भी कानूनी ढंग से सरकार से सहयोग करे लेकिन ग़लती किसी की हो और सज़ा किसी और को दी जाए। अरबी मदरसों के बारे में जो लोग अपनी अज्ञानता के कारण तीखी राय रखते हैं निम्न लिखित चन्द तथ्यों और दलीलों की रोशनी में अपना सुधार कर लें।

डा० राजेन्द्र प्रसाद मदरसे के विद्यार्थी थे : हिन्दुस्तान के सबसे पहले राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी अरबी मदरसे के पढ़े हुए थे। हज़रत मौलाना अब्दुलमाजिद दरयाबादी साहब लिखते हैं कि –

'एक लड़का चूड़ीदार पाजामा, कलीदार कुरता, दोपल्ली टोपी पहनकर और बग़दादी काइदा लेकर मस्जिद के मकतब में पढ़ने जा रहा है।"

आप पूछेंगे कि वह किसकी बात कर रहे हैं ? "यह थे आपके राष्ट्रपति डा०राजेन्द्र प्रसाद साहब।" आप बताइये इतने बड़े इंसान एक अरबी मदरसे के पढ़े हुए थे। केवल यही नहीं हज़ारों इंसान मदरसे के पढ़े हुए हैं।

उपराष्ट्रपति कृष्णकान्त जी मेरे अच्छे दोस्त थे जिनका अभी हालही में देहान्त हुआ है मदरसे के पढ़े हुए थे। इन्द्र कुमार गुजराल भूतपूर्व प्रधानमंत्री यह भी उर्दू के अच्छे स्कालर हैं उन्हें भी किसी मोलवी साहब ने उर्दू पढ़ाई होगी।

मदरसों की अरबी भाषा संयुक्त राष्ट्र की भाषाओं में शामिल : अरबी भाषा संयुक्त राष्ट्र की छः भाषाओं में से एक भाषा है। यह अरबी भाषा मदरसे वाले ही सिखाते हैं और मदरसे के पढ़े हुए लड़के बाहरी देशों में जाकर नौकरी हासिल करते हैं और अपने देश को फारेन करेंसी भेजते हैं। खुद भारत सरकार की नौकरियों में बहुत से कर्मचारी हैं जो मदरसों के पढे हुए हैं। अब लेख को समाप्त करते हुए यह कहे बिना नहीं रहूंगा कि वाजपेयी जी, सोनिया गांधी जी, देवगौड़ा जी, नरायनदत्त तिवारी ऐसे कई बड़े लीडर अक्सर, मौलाना अली मियां और मदरसों के दूसरे उलमा और जिम्मेदारों से मिलने के लिए आते जाते रहे। फिर सरकारी अधिकारी, सिक्योर्टी, सी०आई०डी० और न जाने कैसे कैसे सरकारी कर्मचारी आए। अगर यहां आतंकवाद होता तो क्या पुलिस वालों और सी०आई०डी०वालों को दिखाई नहीं देता।

(पृष्ठ ६ का शेष)

(रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया मुसलमान कोई पेड़ लगाए या खेती करे, और उससे इन्सान फाइदा उठाएं या परिन्दे तो उसके लिए सदकः है। (बुखारी व मुस्लिम)

१२३. बटाई पर जमीन देना –

हज़रत अम्र बिन दीनार ताबअ़ी ने बयान किया है कि मैंने ताऊस (ताबअ़ी से एक बार कहा आप बटाई पर ज़मीन उठाना छोड़ देते तो अच्छा होता, क्योंकि लोगों का खयाल है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इससे मना फ़रमाया था तो उन्होंने कहा मेरा तरीक़ा यह है कि मैं किसानों के लिए ज़मीन भी देता हूं और उसके अलावा भी उनकी मदद करता हूं और उम्मत के बड़े आलिम अर्थात अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ने मुझ को बताया था कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ज़मीन को बटाई पर उठाने से मना नहीं फ़रमाया मगर यह फरमाया था कि अपनी ज़मीन अपने दूसरे भाई को खेती के लिए दे देना उससे बेहतर है कि उस पर कोई निश्चित लगान वसूल करे। (बुखारी)

१२४. पैदावार के आधे हिस्से पर मामला –

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने खैबर के यहूदियों से पैदावार के आधे भाग पर मामला किया, आपने अपनी बीवियों को सौ वसक (पैमाना) दिया करते अस्सी वसक खजूर और बीस वसक जौ, हज़रत उमर (रज़ि०) ने खैबर के हिस्से कर दिये और बीवियों को इख़्तियार दिया कि ज़मीन व पानी वाला हिस्सा ले लें या पहले वाला हिस्सा उनके लिए बाक़ी रखा जाय, तो उनमें से किसी ने जमीन वाला हिस्सा लिया और किसी ने वसक वाला हिस्सा, हज़रत आइशा (रज़ि०) ने जमीन वाला हिस्सा इख़्तियार किया। (बुखारी)

१२५. माल में बरकत का तरीका:

हज़रत हकीम बिन हुजाम (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि ने फरमाया यह माल में आकर्षण तथा मिठास है जो इसे बिना लालच के लेगा, तो उसमें बरकत होगी और जो इच्छा पूर्ति के लिए लेगा तो बरकत न होगी और यह मिसाल ऐसी है कि आदमी खाता है और पेट भरता नहीं और ऊंचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। (बुखारी, मुस्लिम)

सुन्दर रहन सहन

(बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(पांचवी क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

घर गृहस्थी के लिए सलीक़ामन्दी शर्त है

ख़ानदानी (घर–गृहस्थी) कोई आसान काम नहीं है। जिनको अनुभव नहीं है उनके लिए बहुत कठिन है। घरदारी यह नहीं है कि घर में जो चीज़ हो सर पर उठाकर रख लो। या बक्स से रूपया निकाल कर जिन्स मंगा लो, और पका कर खा पी के बिस्तर पर लेटकर सो रहो– कुत्ता बिल्ली आये या चोर तुम्हारी बला से। घर दारी वह चीज़ है जिसके लिए समझ व साहस, अख़लाक़ व मुरूवत (सहनशीलता), सलीक़ामन्दी और सहनशलीता सब बहुत ज़रूरी हैं। अगर यह बातें न हुईं तो घरदारी क्या खाक है। कुछ अनुभवविहीन (नातजर्बेकार) महिलाओं का विचार है कि खानादारी कोई कठिन नहीं। वह इन मामलात को समझती नहीं हैं घर–गृहस्थी एक झंझट का काम है जिसमें फंस कर न सर छूटता है न पांव। अनुभवी व्यक्तियों के कथनानुसार जिसको बद्दुआ (श्राप) दो तो यही काफ़ी है कि तुझ पर घर पड़े। जीवन में औरतों को दो मरहले (कठिन काम) तय करने होते हैं। एक ख़ानादारी का दूसरे बच्चों के पालन–पोषण का। अगर यह दोनों काम पूरे हो जायें तो बड़ी बात है।

खानादारी में हज़ार तरह के मामले पेश आते हैं जिनके कारण बदनामी ही बदनामी होती है। जो महिलायें आज़ाद मिज़ाज व आराम तलब हैं, जिनको बद्नामी का तनिक भी ख़्याल नहीं उन को कुछ दुशवार नहीं वह हर हाल में खुश हैं। पति ने जो पाया हाथ में धर दिया। अलल्ले तलल्ले किया। खाया पिया। आराम से टांग फैलाकर सो गईं। दुनिया व माफ़ीहा (दुनिया–जहान) की खबर नही रही। कोई भूखा हो या नंगा, मां हो या बहन, रिश्तेदारों और सास नन्दों की कौन कहे, किसी की परवाह नहीं, किसी पर चाहे कुछ गुज़र जाये। तुफ़ (थू) है ऐसी ज़िन्दगी पर जिस से किसी का भला न हो। ऐसे (बेफ़ैज़) व कम हिम्मतों का पड़ोस भी अच्छा नहीं। पास रहने की बात कौन करे। ऐ बच्चियों ! शरीफ़ों से यह ख़िसलतें (स्वभाव) दूर होना चाहिए। उनके लिए घर–गृहस्थी, सलीक़ामन्दी (सुव्यवस्था) बच्चों की तर्बियत (दीक्षा) शौहर की ताबेदारी (आज्ञापालन), हक़शनासी (सत्य को पहचानना) और कुंबापरवरी बहुत बड़ी कामयाबी और खुशनसीबी है।

ख़ानादारी के मामले

ख़ानादारी से अगर तुम वाक़िफ़ नहीं हो तो मैं तुम्हारे सामने खानादारी के तमाम मामले पेश करती हूं। अगर गौर करोगी और व्यवहार में लाओगी तो हमेशा कामयाब रहोगी। न कभी नाकाम रहोगी और न कभी तुम पर ऐतराज होगा। हर एक तुम्हारा हमदर्द और हाथ बटाने वाला होगा। यह याद रखो कि बहू ने ससुराल में क़दम रखा, आज़माइश शुरू हो गई। यह आम दस्तूर है। खुदा ने तुम्हें समझ दी है तो खूब समझ बूझ कर क़दम उठाओ। जिस समय से तुम्हारे हाथ में काम दिया जाये उस वक़्त से अपने को सबका ताबेदार समझो। हर एक की नाज़बर्दार, फरमाबर्दार बन जाओ। जो तुम्हारे नाज़बर्दार थे अब तुम उनकी नाज उठाने वाली हो जाओ। गोया तुम सब की बड़ी हो। कोई काम अपनी राय से न करो इन बातों में अपना मर्तबः बड़ा न समझो। उनकी राय और खुशी को ऊपर समझों उनसे छिपा कर कोई चीज़ न खाओ। अपनी ज़रूरतों के साथ उनकी ज़रूरतें पूरी करती रहो। मगर मौक़ा देखकर । अगर वह तुम्हारे जैसे विचार के हैं तो तुम उनका साथ दो। अगर विरोधी हैं तो हक़तलफ़ी (हक़मारना) न करो। यह मामले खुद अपनी राय से नहीं समझे जा सकते। दूसरी और रायें दरकार हैं। अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनने से क्या होता है। अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता यह ज़रूर है कि 'सोना जाने कसे, आदमी जाने बसे। मगर अपनी ही रायपर चलने (खुदराई) से किसी की तबीयत मुश्किल से समझ में आती है। यह मानना कि अन्दाज़ किसी का छिपा नहीं रहता। लेकिन बैठ के, पूछ के, सुनके, देख के जब मालूम होता है।

अगर खुदा ने तुम्हें तौफीक दी तो जैसा हो तुम भलाई करती रहो वरना तुम्हारी ही बेसब्री (आतुरता), बदएखलाक़ी ज़ाहिर होगी। एहसान सर झुका देता है। अच्छे बर्ताव से दुश्मन भी दोस्त हो जाते हैं। हक़तलफ़ी और कंजूसी से कुछ दौलत नहीं जमा हो जाती बल्कि बुरे तरीक़े से ख़र्च होती है। एक की ब़चत से दस का नुकसान होता है। समझदार तजुर्बः कर चुके हैं। अगर तुम्हें ख़र्च माकूल (पर्याप्त) नहीं मिलता और तुम भी किसी क़ाबिल नहीं हो तो अवश्य तुम्हारी मजबूरी देखी जा सकती है। जब तक तुम्हारे वाह्य और आन्तरिक व्यवहार अच्छे रहेंगे, अगर ख़ुदा ने तुम्हें किसी योग्य बनाया है तो यह ज़रूरी नहीं कि कंजूसी पर अड़ी रहो दूसरों को न दो अपने और अपने बच्चों पर दिल खोलकर ख़र्च करो। जेवर बनाओ कपड़े उम्दा से उम्दा पहनो, जमा भी करो और घर की ज़रूरतें मर्दों पर रखो। यह सरासर ग़ल्ती और बद एख़लाकी है, तंग दिली है। बल्कि अपनी जान पर जुल्म है। ऐसों का कोई साथ नहीं देता। हर एक विरोधी होता है।

ऐ बच्चियो ! अगर तुम्हारे हाथ में घर का काम है और तुम घर की मालिक कहलाती हो तो तुम खूबियों की भी मालिक बनो, सिर्फ रूपयों की मिलकियत से मालिक नहीं होता। घर की तमाम ज़रूरतें तुम ही को पूरा करनी पड़ेंगी। महीना और साल के बीच में जो कुछ ज़रूरतें पेश आयेंगी लामुहालः तुम्हीं पूरी करोगी। शादी ब्याह और बहुत से ऐसे काम पेश आते रहते हैं जो किसी हाल में टल नहीं सकते। उस वक़्त यह बहाना चल नहीं सकता कि हमारे पास नहीं है। हम कैसे कर सकते हैं। जैसा अक्सर औरतें कह कर टाल देती हैं मगर फिर कैसी बदनाम व नाकाम होती हैं। फिर भी अफसोस, यही अन्दाज़ रखती हैं – अगर तुम घर न संभालोगी तो हर एक करने वाले से बदगुमान होगी, क्योंकि तुम्हें अनुभव नहीं है। तुम जरूरत को जरूरत नहीं समझ सकतीं। अलावा इसके तुम्हें गल्ले को रेट भाव मालूम न होगा। न कपड़े की कीमत। न काम करने की योग्यता रखोगी जैसा कि दुनिया में दस्तूर है। करना कराना, देना, लेना, हक व नाहक़ समझना, घर की मरम्मत व सफ़ाई, और जो हौसिला, शौक़ या दस्तूर के अनुसार करना होता है, उन बातों को तुम क्योंकर समझोगी। जब यह होगा तो दूसरे करने वाले से बदगुमानी (कुधारणा), फिर बदगुमानी से रंजिश, रंजिश से मैल (मनमुटाव) पैदा होगी। काम बिगड़ के रह जायेगा। इस समय तुम को अपनी खास ज़रूरतों के अलावा कोई और ज़रूरतें मालूम नहीं हैं। अभी तुम्हें मेरी इस नसीहतें (उपदेश) व्यर्थ मालूम होती हैं। बल्कि यह विचार होगा कि जो मैं कह आई हूं अगर करें तो इससे बेहतर कर सकते हैं। या जो कर रहे हैं इसेस बेहतर । मगर नहीं मात्र विचार है। जिस समय तुम्हारे हाथ में घर दिया जाये और ज़रूरतें दरपेश हों आवश्यकतायें सामने हों तो फिर सारी सच्चाई खुल जाये। कुछ करते धरते न बने। आई हुई अक़्ल जाती रहे। (जारी)

अनुवाद एवं प्रस्तुति : मो० हसन अंसारी

मानव सेवा ईश उपासना है

तुम से तोडूं तो किस से जोडूं

मौलाना गैलानी की आत्मा से क्षमा के साथ कि कुछ मगधी शब्दों को यू०पी० के पूर्वी शब्दों से बदल दिया है।

(ह० आज़मी)

प्यारे मुहम्मद जग के सजन
तुम पर वारूं तन मन धन
तुमरी सुरतिया मन मोहन
कबहू करावौव तो दर्शन
जीया कूढ़े दिलवा तरसै
कृपा के बदरा कहिया बरसे।
तुमरी दुवरिया कैसे छोडूं
तुम से तोडूं तो किस से जोडूं
तुमरी गली की धूल बटोरूं
तुमरे नगर में दम भी तोडूं
जी का अब अरमान यही है
आठों पहर अब ध्यान यही है
सल्लल्लाहु अलैका नबिया
तुमरे दुवारे आया दुखिया
हंसिया एहकी पकड़ो हो राजा
अपने हसन व हुसैन का सदका
द्योवा घेरे हैं नाव का हम के
अब नहीं हम हैं अपने बस के।।
शीष पा एहके पावां धरिहौ
पीत की अगिया मन मां भरिहौ
भदरहु पै तनी कृपा करिहौ
सपने मा तुम ऐसन करिहौ
राजा तुमरी द्योढ़ी बड़ी है।
रहमत तुमरे नाम पड़ी है।
अन्धारा का तू रहिया बताऊ
हृदय की ऐहकी ज्योत जगाऊ
डगरी अपनी एहका चलाऊ
बोदा कै तुम बुद्धि बनाऊ
खींचौ एहका पाप नरक से
धोऊ कालिखा मुह कै इहके
तुमरे पिया की ऊंची अटरिया
तुम बिन वा नहीं हमरी गुजरिया
बिचला बिचला रहली नजरिया
परखल है इक तुमरी दुवरिया
उनकर पतवा तुमरे से चलिहै
खोजवा भी उनकर तुमरे से मिलिहै
पीकै पतिया तुमही लइहौ
उनकर बतिया तुमही सुनइहौ
हमना का निंदिया से तुमही जगइहौ
मरल भयल का तुमही जिलइहौ
धर्मी भइलौं तुमरी दया से
मुक्ति भी होइहै तुमरी दुआ से

न्याय प्रियता के शानदार नमूने

डा० मु० इज्तिबा नदवी

इस्लाम की प्रमुख व प्रत्यक्ष विशेषता ख़ुदा की धरती पर न्याय स्थापित करना, मानव समाज को अन्याय व अत्याचार से मुक्त कराना तथा उसे सुख, शान्ति, आपसी सहानुभूति और सहयोग का घर बनाना था। अतः कुरआन पाक में और नबी सल्ल० की हदीसों में जगह जगह न्याय स्थापित करने और अपने परायों के साथ न्याय करने का आदेश व नसीहत पायी जाती है। उदारहण के लिए कुछ आयतें प्रस्तुत हैं :

निस्संदेह तुम को अल्लाह इस बात का आदेश देते हैं कि हक पहुंचा दिया करो। निस्संदेह अल्लाह जिस बात की तुम को नसीहत करते हैं वह बात बहुत अचछी है निस्संदेह अल्लाह बहुत अच्छी तरह सुनते और देखते हैं। (४:५८)

एक दूसरी आयत में अल्लाह का इर्शाद है :

'और जब तुम बात किया करो तो न्याय रखा करो चाहे वह व्यक्ति रिश्तेदार ही हो। (६:१५२)

एक और आयत जो बड़ी महत्वपूर्ण है देखिए :

'ऐ ईमान वालो ! अल्लाह के लिए पूरी पाबन्दी करने वाले न्याय के साथ गवाही देने वाले रहो और ख़ास लोगों की दुश्मनी तुम्हारे लिए इस का कारण न हो जाए कि तुम न्याय न करो। न्याय करो कि वह परहेजगारी से अधिक निकट है।' (५:८)

न्याय करने में अपना भाई और पराया, दोस्त और दुश्मन, छोटा और बड़ा, मर्द व औरत समान हैं। नबी सल्ल० ने न्याय करने वाले इनसान, अधिकारी व जज को बड़े आदर्णीय शब्दों से याद किया है :

'कियामत के दिन जब सूरज नेज़े पर आ जाएगा और लोग धूप और तपिश से बिल बिलाते फिर रहे होंगे और किसी को छाया न मिलेगी केवल सात प्रकार के व्यक्तियों के लिए खुदा की छाया प्राप्त होगी इनमें न्याय स्थापित करने वाला व्यक्ति भी होगा।'

आइए! इस संदर्भ में मुसलमानों के इतिहास की कुछ शिक्षाप्रद घटनाएं भी पढ़ते चलें।

नबी करीम सल्ल० मदीना हिजरत कर चुके हैं। मदीना पर इस्लाम की छत्र छाया है। अल्लाह के आदेश पर मुसलमान की रग रग में अपना स्थान बनाते जा रहे हैं। इबादत और अल्लाह के आदेशो के पालन की चर्चा है। यदि भूल से कोई गुनाह हो जाता है, तो स्वयं हीं दंड पाने के लिए नबी सल्ल० के दरबार में हाज़िर हो जाते हैं और अपनी ग़लती को स्वीकार कर लेते हैं। इसी बीच ऐसी घटना घटी जो कि रहती दुन्या तक के लिए रोशनी का मीनार और न्याय का उच्च नमूना साबित होती है।

कबीला कुरैश के एक उच्च परिवार बनू मखजूम की एक महिला चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ ली जाती है। उन्हें न्याय के लिए पेश किया जाता है। जुर्म साबित हो जाता है जिसकी सज़ा हाथ कटवा देना है। कुरैश को बड़ी गहरी चोट पहुंची है। अपमान का आभास होता है। किसी भी तरह अपराधी औरत को सजा से बचाना चाहते हैं। मगर नबी करीम सल्ल० से उसके लिए सिफारिश कौन करे ? अचानक उन को धयान आता है कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० नबी करीम सल्ल० को बहुत अधिक प्रिय हैं, उनको बहुत अधिक चाहते हैं, अतः यदि वे इस मामले में बात करें तो आशा है कि अवश्य मान ली जायगी। हज़रत उसामा रज़ि० कुरैश के लोगों के कहने से नबी करीम सल्ल० की सेवा में सिफारिश लेकर पहुंच गए। उनकी बात सुनकर नबी सल्ल० का चेहरा मुबारक गुस्से से सुर्ख हो गया। आपने फरमाया :

'उसामा तुम अल्लाह की निर्धारित की गयी सज़ा के स्थगित करने के बारे में सिफारिश करने आए हो।' उसके बाद आप मिम्बर पर चढ़े और फरमाया : 'तुमसे पहले के लोग इसलिए विनाश का शिकार हुए कि यदि उनका कोई सभ्य व सम्मानित व्यक्ति चोरी करता तो उसे छोड़ें देते और यदि कमज़ोर तथा छोटा आदमी चोरी कर लेता तो उसे सज़ा देते। खुदा की क़सम यदि फातिमा (रज़ि०) बिन मुहम्मद चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काटने का हुक्म देता।'

(बुख़ारी व मुस्लिम)

यदि विधि के अनुसार ऐसा निस्पक्ष और अटल फैसला है जो मुस्लिम समुदाय का हमेशा मार्गदर्शन करता रहेगा।

अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० की खिलाफत का ज़माना है। राज्य की न्याय व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था और सैन्य व्यस्था को सुधारा जा रहा है। हर–हर कदम पर भाईचारा, समानता और न्याय का महत्व समझा जा रहा है। कहीं कोई भेदभाव नहीं है। एक बार मिश्र में उनके बेटे अबू शहमा ने कोई शरबत पिया, नशा हो गया। हज़रत अम्र बिन आस की ख़िदमत में पाक करने के लिए हाजिर किये गये। उन्होंने सब के सामने कोड़े मारने के बजाए घर के भीतर कोड़े मारे। हज़रत उमर (रज़ि०) को मालूम हुआ तो हज़रत अम्र बिन आस को तो माजूल कर देने की धमकी दी और बेटे को मिस्र से मदीना बुलाकर बीमारी की हालत में सब के सामने कोड़े मारे। यह कोड़े इस्लामी हद (दण्ड) के तौर पर न थे इस लिए कि वह कोड़े तो लग चुके थे बल्कि यह बाप की तरफ़ से तंबीह थी और ख़लीफ़ा के बेटे के साथ विशेषता पर नागवारी की घोषणा थी। नाटे : यह शत्रुओं का गढ़ा हुआ झूट है कि उमर (रज़ि०) ने बेटे को इतना मारा कि बेटे का देहान्त हो गया या यह कि कुछ कोड़े उनकी क़ब्र पर मारे यह निरा झूट है।

न्याय प्रियता की एक घटना और प्रस्तुत की जाती है। अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली रज़ि० की खिलाफत है। वे कूफा में जनता की ख़ैर ख़बर लेने के लिए गश्त कर रहे हैं कि अचानक उनकी नज़र एक ईसाई पर पड़ती है। उसके पास अपनी कवच देखते हैं। वे उसको लेकर काज़ी शुरैह के पास जाते हैं और एक सामान्य व्यक्ति की तरह उसके विरुद्ध अपना पक्ष प्रस्तुत करते हैं :

'यह कवच मेरी है मैंने इसे बेची है और न हिबा की है।'

काजी साहब ने ईसाई को सफाई का अवसर देते हुए कहा: अमीरूल मोमिनीन जो कुछ कह रहे हैं उसके बारे में तुम्हें कुछ कहना है।'

अभियुक्त ईसाई ने कहा : कवच तो निश्चय ही मेरी है और अमीरूल मोमिनीन भी मेरे निकट झूठे आदमी नहीं हैं।

काज़ी ने हज़रत अली से पूछा कि आपके पास इसका कोई सुबूत है कि कवच आपकी है ?

हज़रत अली हंस दिए और कहा : मेरे पास इसका कोई सुबूत नहीं है।

यह सुनकर काज़ी ने निर्णय दिया: कवच ईसाई को दे दी जाय।

ईसाई कवच लेकर जाने लगा हज़रत अली उसे देखते रहे। कुछ कदम जाकर वह वापस आया और रुंधी हुई आवाज़ में कहा मैं गवाही देता हूं कि यह आदेश अल्लाह के नबियों के हैं। अमीरूल मोमिनीन मुझे अपने काज़ी के सामने ले जा कर पेश करते हैं और काज़ी उनके विरुद्ध निर्णय देता है।

यह कहते हुए उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया और घोषणा की :

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।'

अमीरूल मोमिनीन ! खुदा की कसम यह कवच आपकी है, जब आपने सिफ्फीन की ओर कूच किया तो मैं आपके लश्कर के पीछे हो लिया। यह कवच मैंने आप के बादामी ऊंट के सामान से निकाली।

हज़रत अ़ली रज़ि० ने फरमाया कि जब तुम ईमान ले आए और सच बोल रहे हो तो अब ले जाओ यह कवच तुम्हारी ही है।

ज्ञान फैलाओ और अज्ञानता मिटाओ

Mohd. Aslam

(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

मुस्लिम शासकों का अख़्लाक़

आमिना उस्मानी

हिन्दुस्तान में मुस्लिम शासनकाल (जिसे सामान्य रूप से 'मध्य कालीन भारत' के नाम से जानते हैं) धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और सामाजिक रूप से बड़ा महत्व रखता है। यही कारण है कि भारत के लोगों को इस काल के इतिहास में बड़ी रूचि रही है और वर्तमान हिन्दुस्तान में यह रूचि कुछ और अधिक बढ़ गयी है एक ओर इस काल के राजनैतिक तौर तरीक़े, शासन व्यवस्था, धार्मिक एवं सांस्कृतिक व सामाजिक व आर्थिक हालात को जानने व समझने की संजीदा व ज्ञानात्मक कोशिशें हो रही हैं, तो दूसरी ओर देशवासियों के एक वर्ग की लगातार योजनाबद्ध यह कोशिश और अभियान है कि उस काल का इतिहास बदल कर उसकी ऐसी घिनौनी तस्वीर प्रस्तुत की जाए कि जिससे न केवल यह कि मुस्लिम शासकों से नफरत पैदा हो बल्कि वर्तमान दौर में उनके धर्म वालों के विरुद्ध भावनाएं उत्तेजित हों। इस परिस्थिति में इस बात की आवश्यकता और अधिक बढ़ गयी है कि मध्य कालीन भारत के इतिहास का अध्ययन बड़ी गंभीरता के साथ किया जाए और उसमें रूचि भी ली जाए और उस काल की घटनाओं एवं हालात (राजनैतिक एवं सामाजिक) का गहन अध्ययन करके उनका सही चित्रण किया जाए और ऐतिहासिक तथ्यों को दूषित व धूमिल करने के प्रयासों का विफल कर दिया जाय।

हिन्दुस्तान के तटीय क्षेत्रों में मुसलमानों के आगमन का सिलसिला सातवीं शताब्दी ईसवी की चौथी दहाई से आरम्भ हुआ। पश्चिमी तट पर थाना और भड़ौंच के क्षेत्रों में मुसलमानों का प्रथम सैनिक अभियान हज़रत उमर रज़ि० के शासन से जोड़ा जाता है। दक्षिण के तटीय क्षेत्रों में मुस्लिम अरब व्यापारियों का आगमन आठवीं शताब्दी ईसवी से आरम्भ हुआ जो उस क्षेत्र में इस्लाम के परिचय का साधन बना और बाद में यहां मुस्लिम उपनिवेशों की स्थापना और विभिन्न स्थानों पर उनके धार्मिक व सांस्कृतिक केन्द्रों के अस्तित्व में आ जाने के बाद इस्लाम के प्रचार व प्रसार को और अधिक बढ़ावा मिला। लेकिन हिन्दुस्तान में मुसलमानों की सबसे पहली हुकूमत ६३ हिजरी ७१२ ई० में नवजवान सेनापति मुहम्मद बिन क़ासिम के मार्गदर्शन में सिन्ध की विजय के नतीजे में सामने आयी। फिर हुकूमत के स्तर पर यहां इस्लाम के प्रचार और इस्लामी संस्कृति व सभ्यता को बढ़ावा मिला और इसी दौरे से वह प्रगति पथ पर बढ़ना शुरू हुआ।

यद्यपि मुहम्मद बिन क़ासिम को पूरे दो साल भी सिन्ध में हुकूमत करने का अवसर न मिलसका और उनके उत्तराधिकारियों के काल में अरबों की हुकूमत यहां थोड़े ही क्षेत्रों (मन्सूरह व मुल्तान) तक सीमित होकर रह गयी लेकिन उनकी हुकूमत का यह सिलसिला किसी न किसी तरह ६८५ई० तक चलता रहा यहां तक कि करामत सम्प्रदाय के लोग इस पर क़ाबिज़ हो गए।

यहां इस तथ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि सिन्ध में अरबों की यह हुकूमत (यद्यपि इसे बहुत अधिक विस्तार व फैलाव न मिला) हिन्दुस्तान में इस्लाम के प्रचार और इस्लामी सभ्यता एवं संस्कृति को बढ़ावा देने में बड़ी लाभकारी साबित हुई और शायद यह कहना भी अनुचित न होगा कि इससे हिन्दुस्तान के दूसरे भागो में मुस्लिम विजयों के रास्ते हमवार हो गए। इसीलिए सिन्ध की विजय 'बाबुल इस्लाम फ़िल हिन्द' अर्थात 'हिन्दुस्तान में इस्लाम का दरवाज़ा'' के नाम से भी प्रसिद्ध है इसके अलावा सिन्ध में अरबों की हुकूमत इस दृष्टि से भी महत्व रखती है कि यहां पहली बार हिन्दुस्तान में मुसलमानों को विजेता व शासक केरूप में संबंधों व मामलों को स्थापित करने और उनके साथ अपने बर्ताव के प्रदर्शन का अवसर और इन सबसे महत्वपूर्ण यह कि सिन्ध के प्रथम शासक व विजेता मुहम्मद बिन क़ासिम ने अपनी हुकूमत के अन्तर्गत हिन्दुओं की वैधानिक स्थिति का निर्धारण किया जिसे इस्लाम में ज़िम्मी कहा जाता है। और इनके प्रति जो उदारतापूर्ण व्यवहार अपनाया वही बाद के दौर में उत्तरी हिन्दुस्तान में तुर्क शासकों व मुग़ल बादशाहों के लिए नमूना साबित हुआ।

ऐतिहासिक घटनाएं इस बात

की गवाह हैं कि कुछ अपवादी उदाहरणों को छोड़कर यहां पूरे मुस्लिम शासन काल में ग़ैर मुस्लिमों के साथ शासकों व बादशाहों का व्यवहार नम्रतापूर्ण, उदारता पर आधारित और न्यायपूर्ण ही रहा है। इस पृष्टिभूमि में यह अध्ययन बड़ा महत्व रखता है कि सिन्ध में हुकूमत के दौरान मुहम्मद बिन कासिम ने हिन्दुओं के साथ किस प्रकार का व्यवहार रखा और उनके साथ सुलूक व बर्ताव का क्या स्तर स्थापित किया ?

सिन्ध में मुहम्मद बिन कासिम की हुकूमत की स्थापना के बाद सबसे पहले यह मौलिक प्रश्न सामने आता है कि उसके अन्तर्गत हिन्दुओं की शरई (धर्मशास्त्र के अनुसार) स्थिति क्या होगी? उनके साथ ज़िम्मी का बर्ताव किया जायेगा या ग़ैर मुस्लिमों के किसी और वर्ग (जंग में पकड़े गए क़ैदी या शरण लेने वाले) की हैसियत से? सिन्ध के इतिहास के प्रख्यात स्रोत (हज नामा मिन्हाजुल मसालिक–अनुवाद दरफारसी–अली बिन हामिद कूफी) के वक्तव्य के अनुसार मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्ध के विभिन्न क्षेत्रों के उन पराजितों (जिनमें ब्राह्मण व बौद्ध दोनों सम्मिलित थे) को वैधानिक रूप से ज़िम्मी की हैसियत से मान्यता दी और उन पर ज़िज्या लागू किया जिन्होंने अपने प्राचीन धर्म पर रहते हुए मुस्लिम हुकूमत के मातहत रहने पर अपनी इच्छा व्यक्त की। इस हैसियत से उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता मिली और प्राचीन मन्दिरों की सफाई, मरम्मत व नवनिर्माण की अनुमति मिली।

इन ज़िम्मियों पर तीन दर (धनी के लिए ४८ दिरहम मध्य वर्ग के लिए २४ दिरहम और इनसे कम आय वालों के लिए १२ दिरहम) के अनुसार वार्षिक जिज्या लागू किया। इस बारे में सिन्ध के विजेता ने नियमित रूप से अध्यादेश भी जारी किया और सिन्ध के हिन्दुओं (ज़िम्मियों) को यह साफ़ साफ़ विश्वास दिलाया कि उनको धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त रहेगी और उनके धन व सम्पत्ति से कोई छेड़छाड़ न की जायेगी।

यद्यपि ऐतिहासिक मूलस्रोतों में व्याख्या नहीं मिलती लेनिक अनुमान यही है कि सिन्ध के विजेता ने इराक के गवर्नर से मालूम करने के बाद ही सिन्ध में पराजितों की शरई हैसियत निर्धारित की होगी। कुछ आधुनिक इतिहासकारों ने (बिना किसी हवाले के) जोरदार तरीके से यह उल्लेख किया है कि मुहम्मद बिन क़ासिम ने इराक़ के बारे में अपना उपरोक्त दृष्टिकोण अपनाया। यहां यह स्पष्ट रहे कि सिन्ध की सैनिक कार्रवाई के दौरान और हुकूमत की स्थापना के बाद भी मुहम्मद बिन क़ासिम का यह नियम रहा कि वह महत्वपूर्ण क़ामों में किसी निर्णय पर पहुंचने से पहले हज्जाज बिन यूसुफ़ से विचार विमर्श करते थे और कभी कभी इन कामों में शरई दृष्टिकोण से हल किए जानेवाले मसाइल भी रहते थे और इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं कि गवर्नर इराक स्थानीय उलमा से मश्विरा करते थे और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि कुछ मामलों में गवर्नर ने मुहम्मद बिन क़ासिम को जवाब भेजने से पूर्व खलीफ़ा की राय भी मालूम की।

रहा यह सुवाल कि सिन्ध के हिन्दुओं को किस आधार पर ज़िम्मी का दर्जा दिया गया जबकि वे 'किताब वालों' में से नहीं थे। हजनामा और दूसरे मूल स्रोत के वक्तव्यों व हवालों से यह स्पष्ट होता है कि उनको 'शिब्ही अहले किताब' (किताब वालों जैसे) के ख़ाने में रखकर ज़िम्मियों के अधिकार दिये गये जैसा कि अनेक आधुनिक इतिहासकारों ने यही विचार व्यक्त किया है। यहां यह स्पष्टीकरण भी उचित मालूम होता है कि तेरहवीं शताब्दी ईसवी के आरंभ में उत्तरी हिन्दुस्तान में तुर्कों की हुकूमत प्रसिद्ध दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद उत्तरी हिन्दुओं की इस स्थिति को न केवल शासकों ने सरकारी स्तर पर माना बल्कि इसी के अनुसार उनके साथ व्यावहारिक मामला भी किया गया और यही व्यवहार बाद में भी उनके साथ रखा गया।

इसके अतिरिक्त उस युग के ऐतिहासिक मूल स्रोत और फिक्ही साहित्य में हिन्दुओं के लिए "ज़िम्मी" की परिभाषा की अनेक मिसालें मिलती हैं। यहां इस अपवाद का उल्लेख भी आवश्यक है कि शासकीय काल में उलमा ने शाफई दृष्टिकोण के पालन के लिए यह विचार स्पष्ट किया था कि हिन्दुओं (मूर्तिपूजकों) को जिम्मी कादर्जा नहीं दिया जा सकता लेनिक सर्वसाधारण उलेमा का विचार और मुस्लिम शासकों की राय बराबर यही रही जो ऊपर बतायी गयी है मुगलकाल के अन्तिम चरण के प्रसिद्ध विद्वान एवं सूफी मिर्जा मज़हर जाने जाना (१६६८–१७८१) हिन्दुओं को स्पष्ट रूप से किताब वालों में जानते थे (१२–अ) और तर्जमानुल कुरआन के मौलाना अबुल कलाम आजाद की राय यह थी कि यदि मजूसी व साबेई शिब्ह अहले

किताब" में माने जा सकते हैं तो हिन्दू तो इनसे पहले ग़ैर मुस्लिम के इस वर्ग में शामिल किए जाने के अधिकारी हैं।

हजनामा और दूसरे मूल स्रोतों से यह स्पष्ट है कि सिन्ध की विजय के बाद मुहम्मद बिन कासिम ने यहां के प्रशासनिक मामले ठीक किए और उमवी शासन की अधीनता में वे यहां का कामकाज देखते रहे। यहां शासक होते हुए उन्होंने जनता के साथ नम्रता, सहानुभूति व न्याय का जो प्रदर्शन किया और ग़ैर मुस्लिमों के प्रति जो उदारता स्थापित की वह ऐतिहासिक तथ्यों का अंश बन चुके हैं। यह महानविजेता अपने आप में स्वयं समान, नम्र स्वभाव, न्यायप्रिय था। इराक़ का गवर्नर (जो उनके चाचा व ससुर भी थे) भी इनको जन सामान्य से अच्छे सम्बन्ध व बेहतर सुलूक करने के बराबर निर्देश देते रहे। सिन्ध की विजय के दौरान हज्जाज बिन सूसुफ़ (जिनको सामान्य रूप से एक सख्त, क्रूर व अत्याचारी शासक कहा जाता है) ने विभिन्न अवसरों पर मुहम्मद बिन क़ासिम को लिखित निर्देश भेजे थे।

इनके सबसे पहले निर्देश को यहां संक्षेप में दिया जा रहा है –

"जब उस क्षेत्र पर शासन निश्चित हो जाए और क़िले मज़बूत हो जाएं तो जो कुछ बचे उसको जनता के कल्याणकारी कामों में खर्च करने में विलम्ब न करो। व्यापारियों, किसानों के लिए हर प्रकार की सुविधा रखो इसलिए कि इनके सुखी होने व खुशहाली से देश भी खुश हाल रहता है जो तुमसे जागीर की मांग करे उसे निराश न करो। जनता को शरण देकर उसके दिलों को शक्तिशाली बनाओ।"

इसी प्रकार एक दूसरे अवसर पर इराक़ के गवर्नर ने निर्देश दिया कि "मेरे भतीजे आप एक नियम यह बना लो कि जनता के साथ अत्यन्त नम्रता व मधुरता के साथ पेश आओ ताकि दुश्मन भी आज्ञा पालन पर तैयार हो जाएं। लोगों को हर समय सन्तोष दिलाते रहो।"

वास्तविकता यह है कि इन निर्देशों पर अमल करते हुए मुहम्मद बिन क़ासिम ने जनता के हित व देखरेख में रुचि ली और ग़ैर मुस्लिमों के साथ उदारता का व्यवहार किया। इससे न केवल एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया बल्कि यह भी साबित कर दिया कि इस्लाम का दम भरने वाले जंग या उसकी समाप्ति के बाद पराजित व अधीनस्थों के साथ शांति व भाईचारे का मामला अधिक पसन्द करते है उनके दुःख सुख व उनके कल्याण के लिए दिल से इच्छुक रहते हैं।

सर विलियम म्यूर की समीक्षा

सिन्ध की विजयों पर समीक्षा करते हुए सर विलियम म्यूर ने लिखा है कि "उस समय मुसलमानों ने हिन्दुओं के सारे मन्दिर उसी तरह रहने दिये जैसे पहले थे उनको मूर्ति पूजा से बलपूर्वक नहीं रोका। यहूदियों व पारसियों सबको छूट दी कि अपने धर्म पर चलते रहें और यही कारण है कि इस्लामी राज्यों में भी हिन्दुस्तान ग़ैर मुस्लिम ही रहा।

(पृष्ठ २१ का शेष)

जिन्न हड्डी लीद के अतिरिक्त इन्सानों के खाने से खाते और पीने की वस्तु से पीते भी हैं।

हो सकता है हम इन्सानों की भांति जिन्न भी भूखे और प्यासे होते हों और भूखे प्यास पर हड्डी तथा लीद के अतिरिक्त वस्तुएं खा पीकर भूख प्यास मिटाते हों। इस रिवायत से इतना ही सिद्ध है कि जब इन्सान अल्लाह का नाम लिये बिना खाता और पीता है तो शैतान भी उसके साथ खाने और पीने लगता है।

प्रश्न द्वारा
मोहम्मद अकरम

प्रश्न : क्या गाड़ी का इंशोरेन्स जाइज़ है? अगर ऐक्सीडेंट होने पर उस पैसे से नया सामान लगाया जाये तो क्या ठीक है?

उत्तर : बीमा नाजाइज़ है लेकिन सरकार की ओर से जब्र हो तो मजबूरन कराया जा सकता है। बीमा कम्पनी से एक्सीडेन्ट हो जाने पर जो रकम मिले उसमें से उतनी ही रकम अपनी गाड़ी में लगाएं जितनी जमा की है बाक़ी खैरात कर दें।

प्रश्न : *क्या किसी बच्चे का इंशोरेंस जाइज़ है ? किसी भी हाल में।*

उत्तर : ना जाइज़ है।

प्रश्न : *अगर मस्जिद बहुत दूर हो तो क्या घर में नमाज़ पढ़ लेना चाहिए ?*

उत्तर : अगर अज़ान की आवाज़ आती है तो मस्जिद में नमाज़ अदा करना ज़रूरी है।

प्रश्न : *ट्रेन में सफर के वक़्त किसी भी तरफ रुख करके नमाज़ पढ़ सकते हैं?*

उत्तर : नमाज़ शुरू करते वक़्त क़िब्ला की तरफ रुख़ कर लें फिर गाड़ी चलने में जिधर रुख़ हो जाये कोई हरज नहीं।

ग़ैर मुस्लिम जिन्नों का आहार

अबू मर्गूब

पिछले लेख में आ चुका है कि जिस हड्डी पर अल्लाह का नाम लिया गया उसमें मुस्लिम जिन्नों का आहार (ग़िज़ा) है तथा गोबर लीद में मेंगनी आदि उनकी सवारियों की ग़िज़ा है। लेकिन उन रिवायत में स्पष्ट रूप से गैर मुस्लिम जिन्नों की ग़िज़ा का कोई वर्णन नहीं है परन्तु ध्यान देने से समझ में आता है कि हड्डी में जिन्नों की ग़िज़ा है चाहे उस पर अल्लाह का नाम लिया जाए या न लिया जाए जैसे ज़बीहे का गोश्त हम मुसलमानों के लिए हलाल और ग़ैर ज़बीहे वाला हराम है, अगरचि खाद्यपदार्थ (ग़िज़ाइयत) दोनों में मौजूद है। इसी प्रकार हर हड्डी में जिन्नों की ग़िज़ा है। मगर जिस हड्डी पर अल्लाह का नाम न लिया जाए उससे ग़िज़ा हासिल करना मुस्लिम जिन्नों के लिए ना जाइज़ हो मगर गैर मुस्लिम जिन्न उससे ग़िज़ा हासिल करते होंगे एक दूसरी रिवायत से यह बात और स्पष्ट हो जाती है।

सहीह मुस्लिम किताबुल अशरिबा : में एक रिवायत है कि "जिस खाने पर अल्लाह का नाम न लिया जाए शैतान उसको अपने लिये हलाल कर लेता है।" पीछे आ चुका है कि जिन्न शरीअ़त के मुकल्लफ़ हैं फिर उनका अपने खाने के बारे में सुवाल करना स्पष्ट करता है कि उनके यहां भी हलाल व ह़राम है अतः मुसलमान जिन्न न किसी का माल चुरा कर खाएगा न किसी को नाहक सताएगा। सिवाए इसके कि वह कुकर्मों के लिए तैयार हो जाए।

क्या जिन्न हड्डी या गोबर प्रत्यक्ष खाते हैं ?

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या जिन्न सीधे हड्डी या गोबर खाते हैं या उससे कोई विशेष आहार (खास ग़िज़ा) प्राप्त करते हैं।

बुखारी की ह़दीस में है कि "वजदू अ़लैहा तआ़मन" उस पर अर्थात हड्डी और लीद आदि पर ग़िज़ा पाएंगे।

ऐसा लगता है और सत्य लगता है कि हड्डी तथा गोबर में कोई सूक्ष्म वस्तु है और वही वस्तु जिन्नों की ग़िज़ा है और सम्भव है कि वह गैस जैसी कोई चीज़ हो और जब यह जिन्न उसके पास से गुज़रते हों और उससे गिज़ा लेना चाहते हों तो उस पर इनको अपनी ग़िज़ा मिल जाती हो। और यह सूक्ष्म आहार (लतीफ ग़िज़ा) ऐसी हो जो अगर हड्डी या गोबर से निकल जाए तो उस की मात्रा (मिकदार) में कोई प्रत्यक्ष कमी न हो। यह विचार मैं ने इस आधार पर प्रस्तुत किया कि मैंने देखा कि हलाल जानवर के ज़बीहे की हड्डी की एक मात्रा एक खुले स्थान पर सुरक्षित कर दी गई और वह हड्डी जिन्नों के लिए हलाल भी कर दी गई और वह स्थान भी ऐसा था जो जिन्नों के लिए मशहूर था लेकन एक समय तक न हड्डी गाइब हुई न उसमें कोई कमी हुई, बस गर्मी और हवा से उसकी मात्रा मे जो कमी सम्भव थी वही ज्ञात हो सकी जिस का जी चाहे यह जांच खुद कर ले। इसी प्रकार गोबर का हाल देखा गया। अल्बत्ता यह देखा गया कि कभी तो गोबर सूख कर ईंधन हो गया और कभी कुछ कीड़ों ने उसे खाकर मिट्टी में बदल दिया। प्रत्यक्ष है कि यह खाकी कीड़े (मिट्टी से बने कीड़े) नारी मख़्लूक (अग्नि से बनी सृष्टि) तो न थे जिनको जिन्नों की सवारी समझा जा सके, अगरचि कुछ लोगों का यह मत भी है और उन्होंने जिन्नों को जीवाणु कहा है अगरचि मैं उनसे सहमत नहीं हूं।

ज़मीन्दारी काल में जमीन्दारों के एक क़स्बे में एक हाजी साहिब की मिठाई की दुकान थी। हाजी साहिब खुद और उनके कारीगर हलवाई दिन भर नाना प्रकार की स्वच्छ तथा स्वादिष्ट मिठाइयां शुद्ध देशी घी से तैयार करते। दिन में न दुकान सजाई जाती न आम बिकी होती, शाम को अंधेरा होने के पश्चात दुकान सजाई जाती । पहर रात गये से बिकी आरम्भ होती और आधी रात आते आते सारी मिठाई बिक जाती।

आम तौर से मशहूर था कि हाजी साहिब की दुकान से जिन्नात लोग मिठाइयां ले जाते हैं। एक साहिब ने तो मुझ से खासी बहस की और यह साबित करने की कोशिश की कि हाजी साहब की सारी मिठाई रोजाना जिन्न ले जाते हैं। लेकिन जमीन्दारी का ख़ातिमा होते ही हाजी साहिब की दुकान बैठ गई तब लोगों के समझ में आया कि हाजी साहिब की दुकान से कौन जिन्न मिठाई ले जाया करते थे।

हड्डी माल है, कोई उसका मालिक है, मालिक की अनुमति के बिना मुस्लिम जिन्न उसे नहीं खायेगा।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि हड्डी माल है। उसका व्यापार बेध है। दुन्या भर में इस का प्रबन्ध होता है कि हड्डी व्यर्थ न जाए। उसको एकत्र कर के उससे खाद आदि बनाते हैं। जो उसे एकत्र करता या खरीदता है वह उसका मालिक हो जाता है। एक मुसलमान जिन्न उसे वैध रूप में प्राप्त किये बिना नहीं खा सकता, हां यदि उस में से उड़ने वाली कोई सूक्ष्म वस्तु सुगंध समान जिन्नों का आहार हो तो मालिक की अनुमति की आवश्यकता नहीं कि इससे मालिक के माल में कोई कमी नहीं आती और वह तो स्वतः निकलती ही रहती है जैसी उससे निकलने वाली गंध या गैस। यहां यह बात भी कही जा सकती कि जिन्न जैसी अदृष्टि तथा सूक्ष्म प्राणी के आहार के लिए वह हड्डियां जो किसी की सम्पत्ति नहीं है वहीं परियाप्त हो सकती है।

हो सकता है गोबर और लीद जिन्नों के लिए नजिस न हों–

रही यह बात कि गोबर और लीद आदि तो खुद ही नजिस होती हैं हमारे इस्तिंजा करने से उन पर क्या फर्क़ पड़ेगा फिर उनसे इस्तिंजा क्यों रोका गया? तो हो सकता है कि गोबर और लीद आदि जिन्नों के लिए नापाक न हो। खुद हमारे इमामों में इस प्रकार का मतभेद है चुनांचि हंबली फ़िक़्ह (धर्म विधान) में हलाल जानवरों (वह पशु जिनका मांस खाना वैध है) का गोबर और पेशाब आदि नापाक नहीं है। और स्पष्ट रहे कि मुसलमानों के प्रिय तथा विख्यात महा पुरुष अब्दुल कादिर जीलानी (रह०) हंबली थे। अतः यदि जिन्नों के लिए गोबर और लीद नजिस न हो तो आश्चर्य की बात नहीं। इन्सानों और जिन्नों के लिए बहुत से आदेशों में अंतर होगा।

निष्कर्ष यह कि हड्डी जिन्नों की आजीविका है। लीद और गोबर उनकी सवारियों का आहार है। परन्तु इन चीजों से वह अपनी गिज़ा (आजीविका) किस प्रकार लेते हैं, हदीस में यह स्पष्ट नहीं है अर्थात इन वस्तुओं से आहार प्राप्त की विधि का वर्णन नहीं है। अतः यदि कोई चुप रह कर सन्तुष्ट हो जाता है तो अच्छी बात है वह चुप रहे। परन्तु यदि कोई किसी छुपे अर्थ से सन्तुष्ट हो तो उसको इसका अधिकार है। बस यह आवश्यक है कि जो कुछ शुद्ध हदीस तथा अल्लाह की किताब कुर्आने मजीद से सिद्ध है उसके विरोध में न हो।

हड्डी के अतिरिक्त जिन्नों का आहार

सहीह मुस्लिम किताबुल अश्रिबा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से कोई खाए तो दाहने हाथ से खाए और जब पिये तो दाहने हाथ से पिये इस लिए कि शैतान बाएं हाथ से खाता और बाएं हाथ से पीता है।

शैतान जिन्न इन्सानों के साथ खाता और पीता है

इमाम अहमद बिन हंबल अपनी मुसनद जिल्द ३ पृष्ठ ८ पर लिखते हैं –

जिस ने बाएं हाथ से खाया उसके साथ शैतान ने खाया और जिसने बाएं से पिया उसके साथ शैतान ने पिया। सहीह मुस्लिम किताबुल अश्रिबा बाब आदाबुत्तआम वश्शराब में जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब आदमी अपने घर में दाख़िल होते वक्त अल्लाह का नाम लेता है और फिर जब खाना खाता है और खाने के वक्त अल्लाह का नाम लेता है तो शैतान अपने साथियों से कहता है न यहां रात गुज़ारी का तुम्हारे लिए अवसर है और न शाम के खाने का सहारा है। परन्तु जब घर में दाखिल होते समय अल्लाह का नाम नहीं लेता है तो शैतान अपने साथियों से कहता है। यहां तुम्हारे रात बिताने का अवसर है। और यदि इन्सान खाने के समय भी अल्लाह का नाम नही लेता तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि यहां तुम्हारे शाम ठहरने का भी प्रबन्ध हो गया और शाम के खाने का भी।

इब्ने हजर ने फ़त्हुलबारी जिल्द ६पृष्ठ ३४५ पर लिखा है –

अबूदाऊद ने उमय्या बिन मख़्शी से रिवायत किया है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम विराजमान थे और एक शख़्स खाना खा रहा था। उसने बिस्मिल्लाह नहीं की थी। अन्त में उसने बिस्मिल्लाह कर ली तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अब तक शैतान उस के साथ खा रहा था जब उसने बिस्मिल्लाह कर ली तो शैतान के पेट में जो कुछ था सब उसने कै कर दी;

इन रिवायात में केवल शैतानों का उल्लेख है और वह काफिर जिन्न हैं । इन रिवायात से पता चला कि

इराक़ पर अमरीका का अधिकार

मानवता की मौत

मो० रफ़ी
सिरर्च फेलो, ल०वि०वि०ल०

अमेरिका को प्रारम्भ से इस बात की लालसा थी कि किस प्रकार से खनिज तेलों से युक्त देशों पर अपना अधिपत्य जमाया जाये। इसी कारण से उसने इराक़ की शक्ति का अन्दाज़ा लगाने के लिए इरान तथा ईराक़ के मध्य युद्ध कराया था जो लगभग आठ वर्षों तक चलता रहा। इस युद्ध में लगभग पांच लाख निर्दोष लोगों की जानें गयीं। परन्तु वास्तविक सफलता किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकी। अन्त में अरब देशों के विचार–विमर्श तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की सलाह पर किसी तरह से इस युद्ध का समापन किया गया। दोनों देशों के मध्य युद्ध समाप्त होने पर किसी तरह से उनकी शत्रुता की भावना को समाप्त किया गया। इस युद्ध में अमेरिका ने इरान को परास्त करने हेतु अपनी ओर से इराक को अनेक प्रकार के अत्याधुनिक युद्ध सम्बन्धी हथियार दिये थे। जिससे ईरान को तहस–नहस कर उस पर कब्जा किया जाये।

ऐसा कहा जाता है कि १९९१ में इराक द्वारा कुवैत पर कब्जा करने में भी अमेरिका का ही हाथ था। एक ओर तो अमेरिका ने कुवैत में पश्चिमी परम्पराओं को अपनाने पर बल दिया दूसरी ओर उसने इराक से कुवैत की विलासिता पूर्ण जीवन व्यतीत करने की शिकायत कर उसे कुवैत पर हमला करने का बढ़ावा दिया। इराक द्वारा कुवैत पर हमला होते ही उसने पुनः अपनी अमेरिका नीति में बदलाव कर कुवैत का साथ दिया और इराक़ को यहां से हटने के लिए कहा। इराक को इस बात की आशा न थी कि भूत व वर्तमान में उसका साथ देने वाला अमेरिका उसके विरुद्ध हो सकता है। इसी कारण उसने कुवैत से अपनी सेना हटाने से इनकार कर दिया। इराक को उस समय करारा झटका लगा जब सदैव उसका साथ देने वाले अमेरिका ने उसके विरुद्ध सैन्य कार्यवाही प्रारम्भ कर दी। कुवैत से वापस करने के लिए जंग के अतिरिक्त और भी साधन उपलब्ध थे। जिनके माध्यम से विचार विमर्श के द्वारा उसे हल किया जा सकता था। इराक़ को कुवैत से हटाने का सबसे बड़ा हल संयुक्त राष्ट्र को प्राप्त था जिसका गठन अमरीका तथा उसके मित्र देश (NAATO) तथा दुन्या के अन्य बहुत से विकसित व विकासशील देशों ने किया था।

जब अमरीका व उसके सहयोगी देशों द्वारा इराक़ पर निर्यात सम्बन्धी प्रतिबन्ध लगाये गये तो वहां की निर्दोष जनता भूख व प्यास से व्याकुल होकर मृत्यु की ओर अग्रसर होने लगी। इराक़ की इस स्थिति को अमरीका व उसके सहयोगी राष्ट्र मूक दर्शक बने देखते रहे परन्तु उन्होंने इराक़ी जनता के स्वास्थ्य सम्बन्धी औषधियों की ओर ध्यानही नहीं दिया जिससे वहां के लाचार नागरिकों का जीवन बचाया जा सकता था।

कई वर्षों के बाद अरब देशों के विरोध पर १९९५ में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने इराक़ के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए यह आदेश पारित किया कि इराक़ अनाज के बदले खनिज तेल का निर्यात कर सकता है। हांलाकि इस प्रकार मात्र अनाज के बदले तेल के निर्यात से किसी देश की अर्थव्यवस्था में पूर्ण रूप से परिवर्तन लाना असम्भव है और अनाज के बदले तेल से किसी देश का कितना विकास हो सकता है। इसका अन्दाज़ा अमरीका तथा संयुक्त राष्ट्र संघ स्वयं ही कर सकता है।

१९९१ के इराक पर अमरीका द्वारा मिसाइली हमले से अमरीका को ईराक़ के प्रति ईर्ष्या और अधिक हो गयी क्योंकि इसमें अमरीकी सेनाओं को भी अधिक जोखिम उठाना पड़ा था। इसी शत्रुता का बदला लेने के लिए अमरीका ने इराक़ को नेस्त व नाबूद करने की ठान ली तथा जब भी उसका मूड (Mood) होता वह इराक़ पर बमबारी करके उसका नुकसान पहुंचाता रहा।

१९९८ में भी अमरीका ने इराक़ पर महा विनाशकारी हथियारों के बनाने व रखने का बहाना लेकर उस पर बमों की वर्षा की थी। इस विषय पर भी संयुक्त राष्ट्र संघ ने अनदेखी करते हुए अमरीका का ही पक्ष लिया था।

११ सितम्बर २००१ में अमरीका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर (W.T.C.) पर हुए आतंकवादी हमले के बाद अमरीका ने तालिबान को मुख्य रूप से इसका आरोपी मानते हुए तालिबानों पर भयंकर बमबारी की। इसमें उसामा बिन लादेन को आतंकवादी संगठन के प्रमुख नेता के रूप में तीव्रगति से प्रचलित किया गया।

ऐसा कहा जाता है कि वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमले के दिन इज़राईल के चार हजार नागरिकों ने जो वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में कर्मचारी के रूप में कार्यरत थे उन्होंने एक दिन पहले से ही छुट्टी ले रखी थी तथा हमले के समय वे वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में मौजूद न थे और न ही हमले में उनका कुछ नुकसान हुआ परन्तु अमरीका का ध्यान इस ओर कदापि नहीं गया क्योंकि इज़राईल सेउसके मैत्री पूर्ण सम्बन्ध हैं तथा इज़राईल अमरीका के इस प्रकार के बयान को स्वीकार ही नहीं कर सकता है। अमेरिका द्वारा अफ़गानिस्तान पर भारी मात्रा में बमों, मिसाइलों व टैंकों से हमला किया गया जिसमें न जाने कितने निर्दोषों की जानें गयीं। क्या अफ़गानिस्तान पर अमरीका का आतंवाद नहीं है?

अंत में अमरीका ने इराक़ पर अपने दूरगामी आर्थिक व राजनीतिक लाभों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी योजना का प्रारम्भ किया जिसके बारे में कोई भी देश शीघ्र अनुभव ही नहीं कर सकता है। सर्वप्रथम तो उसने संयुक्त राष्ट्र संघ को यह बात मनवाने पर मजबूर किया कि इराक़ के पास महाविनाशकारी ऐसे जैविक तथा रासायनिक हथियार हैं जिससे उसके प्रयोग से विश्व को खतरा हो सकता है। हालांकि इराक़ के बार–बार इंकार करने के बाद भी संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से महाविनाशकारी हथियारों का पता लगाने के लिए कई दल इराक भेजे गये जिसमें स्वयं अमेरिका के विशेष वैज्ञानिक मौजूद थे परन्तु उन्हें जैविक या रासायनिक हथियारों का पता नहीं चला। संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा भेजे गये दलों की सहायता के लिए इराक़ी मार्गदर्शकों ने उनके इस काम में काफी सहयोग दिया फिर भी किसी न किसी बहाने पर अड़ा रहा।

आख़िरकार अमरीका ने इराक़ के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन को देश छोड़कर चले जाने पर बल दिया। वास्तव में यह एक ऐसी विचित्र घटना है जो अमरीका द्वारा इराक़ पर की जा रही है। ऐसी बातों व कामों से उसे क्षोभ आना चाहिए। किसी भी देश के शासक को हटाना या उसे अपना शासक बनाने का अधिकार उस देश की जनता को ही प्राप्त होता है तथा वह जनता जिसे चाहे अपना शासक बना सकती है। इसमें किसी वाह्य देश या वाह्य शक्ति को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है परन्तु अमरीका अपनी दादागीरी के बल पर प्रत्येक अनैतिक कार्य नैतिक बनाता चला आ रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका अमरीका की अवैध नीति के आगे धूमिल हो चुकी है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अध्यक्ष कोफी अन्नान ने अमरीका की नीति का कड़ा विरोध किया फिर भी जार्ज डब्लू बुश ने अपनी मनमानी के द्वारा इराक़ पर हमला करके उसपर अधिकार जमा लिया। इस अमेरिकी नीति से ऐसा प्रतीत होता है कि कोफी अन्नान जो वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ के अध्यक्ष हैं, वह भी अमरीका के आगे मात्र कठपुतली बनकर रह गये हैं तथा अमरीका ने "जिसकी लाठी उसकी भैंस" **(Might is Right)** वाली कहावत पूरी कर ली उसके आगे किसी की नहीं चल पाई।

इराक़ पर जितने भयानक कंकरीट बमों से हमले किये उसके विनाश के सिवा और कुछ नहीं हो सकता था । जमीनी लड़ाई में भी अमरीका व उसकी सहयोगी सेनाएं मिसाइलों, टैंकों, तोपों तथा राकेट लान्चरों से हमला कर के अपना अधिकार जमा लिया। उस की प्राचीन कालीन भव्य, कलात्मक स्थापत्य कला का विनाश कर दिया। यही नहीं अमरीका अपने पागलपन में इराक़ की आबादी वाले क्षेत्रों पर बम गिराकर हजारों निर्दोष व्यक्तियों, मासूम बच्चों तथा स्त्रियों को असमय ही मृत्यु की ओर भेज दिया। वहां पर आबादी वाले क्षेत्रों का यह हाल हो गया था कि छोटे–छोटे मासूम (अबोध) बच्चों को सुलाने के लिए नींद की दवा खिलानी पड़ती थी। ऐसे निर्दोष लोगों पर हमला करके उनकी हत्या करना अमरीका का इराक पर आतंकवाद नहीं तो और क्या है। बल्कि आतंकवाद का शब्द तो बहुत हल्का है। एक हिंसक सिंह अथवा बाघ तो मानव का वध करता और उसका रक्त पीता है परन्तु अमरीका तो मानव तथा मानवता दोनों का वध कर दोनों का खून चूस रहा है। उसके हाथों मानवता की मौत हो चुकी, अब तो कोई चमत्कार ही मानवता को जीवन प्रदान कर सकता है।

इराक़ पर अमरीकी हमले का एक ही कारण था वह यह कि इराक़ खनिज तेल से युक्त एक सुदृढ़ पेट्रोलियम रियासत थी, विश्व में सबसे अधिक खनिज तेल इराक़ ही में पाया जाता था। इस कारण अमरीका अनैतिक रूप से इराक़ पर कब्ज़ा करके उसे अपना अमरीकी साम्राज्य बनाना चाहता था अतः उससे प्राप्त होने वाले लाभ को अपने कब्ज़े में करने के लिए भरसक प्रयास कर के इराक़ को अपने अधिकार में ले ही लिया। अब वहां प्रजा तंत्र की बहाली एक ड्रामा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

इस्लामी अक़ाइद

मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी (रह०) से लाभान्वित

हमारा विश्वास है कि समस्त सृष्टि को पैदा करने वाला एक निर्दोष व्यक्तित्व है जिस का शुभ नाम अल्लाह है। उसके विषय में हमारे विश्वास यह हैं।

वह एक है, अद्वितीय है न उसके व्यक्तित्व में कोई उस जैसा है न उसके जैसे गुण किसी में हैं। उपासना योग्य केवल वही है उसके अतिरिक्त किसी की उपासना कठोर विद्रोह है। जिसको इस्लामी विधान शिर्क (अल्लाह का साझी ठहराना) कहता है।

२. अल्लाह हय्युं (चैतन्य) है, क़दीर (समर्थ) है, मुरीद है, अ़लीम (ज्ञान स्रोत्र) है, समीअ़ (सर्व श्रोता) है, बसीर (सर्व दृष्टा) है, मुतकाल्लिम है, खालिक़ (सृजनहार) है। इन गुणों के अतिरिक्त वह समस्त सम्पूर्ण गुणों वाला है जिनकी गिन्ती नहीं हो सकती।

३. अल्लाह तआ़ला के गुण उसके व्यक्तित्व के समान आदि तथा अनन्त हैं अर्थात वह सदा से हैं और सदैव रहेंगे।

४. अल्लाह तआ़ला के अतिरिक्त जो कुछ है वह सब अल्लाह तआ़ला का अधिकृति है और उसी का पैदा किया हुआ हैं अच्छी और बुरी हर प्रकार की चीजें उसी की पैदा की हुई हैं। विष, अमृत, बुराई, भलाई सब का पैदा करने वाला वही है। हमारे अच्छे बुरे कर्म सब उसी के पैदा किये हुए हैं। परन्तु इन कर्मों को करने वाले अवश्य हम हैं।

५. उसकी सृष्टि में उसके चाहे बिना कुछ नहीं होता और न हो सकता है। एक पत्ती भी उसके चाहे बिना नहीं हिल सकती।

अपने कर्मों पर हम न तो पूर्णतया अधिकार रखते हैं ना ही पूर्णतया विवश हैं। कोई बीच की बात है जिसको समझने में हमारी बुद्धि विवश है।

६. अल्लाह तआ़ला अपनी सृष्टि पर बड़ा दयावान है। वह उनको आजीविका प्रदान करता है, सन्तान देता है, उनकी प्रार्थनाओं को अंगीकृत देता है। उनकी सहायता करता है। अपने आज्ञाकारी भक्तों से प्रेम करता है उनको अपनी निकटता प्रदान करता है।

७. अल्लाह तआ़ला किसी मुआ़मले में किसी का मुहताज नहीं। निराकार है उसके लिए कोई स्थान नहीं (वह हर स्थान पर है) स्वास्थ्य, रोग, खुशी, ग़म, बुढ़ापा, जवानी से वह मुक्त बरी है। न वह किसी वस्तु से लगा हुआ है न वह किसी में प्रवेश (हुलूल) करता है। न उसके सन्तान है न स्त्री न वह किसी की सन्ता है, न उस पर कुछ अनिवार्य है। जो चाहे करे जो चाहे आदेश दे वह पूर्णतया दोष रहित है पवित्र है तथा हर प्रकार के अच्छे गुणों से परिपूर्ण है।

८. अल्लाह तआ़ला ने अपने अधिकार किसी को नहीं दिये। उसने बन्दों (भक्तों) को कामों पर नियुक्त किया है जैसे मौत के फ़िरिश्ते (मलकुलमौत) को प्राण निकालने पर परन्तु वह अल्लाह के आदेश के बिना प्राण नहीं निकाल सकते। अपने सन्देष्टाओं को सत्यमार्ग के प्रदर्शन पर नियत किया साथ ही यह भी कह दिया कि "ऐ नबी आप जिसे चाहें उसे सत्यमार्ग पर नहीं ला सकते लेकिन अल्लाह जिसे चाहे उसको सत्य मार्ग (हिदायत) मिल सकता है।" (क़िसस : २६) सारांश यह कि हर काम अल्लाह के इख्तियार में है। वही लाभ देने वाला है और हानि भी वही देता है। उसी से आशा (उम्मीद) रखना चाहिए और उसी का भय होना चाहिए।

६. अल्लाह तआ़ला की ज़ात (व्यक्तित्व) और सिफ़ात (गुण) की वास्तविकता किसी की समझ में नहीं आ सकती। (बस हम यही कहते हैं कि वह अपनी ज़ात व सिफ़ात के साथ जैसा है हम उस पर ईमान लाए)।

१०. अल्लाह तआ़ला के जो नाम किताब व सुन्नत में आए हैं उन ही नामों से अल्लाह तआ़ला को पुकारना चाहिए। उर्दू या किसी ज़बान में उसका ऐसा अनुवाद करना जिस से कोई दोष प्रकट हो अवैध है। जैसे क़दीम का अनुवाद उर्दू, हिन्दी में पुराना और फार्सी में कुहना है। अतः इस इलाही नाम का इस प्रकार का अनुवाद अवैध है। अलबत्ता मालिक का अनुवाद फार्सी में खुदा ठीक है।

फ़िरिश्तों पर ईमान

अल्लाह तआ़ला की एक विशेष प्रकार की मख़्लूक (सृष्टि) है जिसे हम फिरिश्ता कहते हैं। फिरिश्ते न मर्द हैं न औरत न खाते हैं न पीते हैं। न

उनको पाखाना पेशाब की आवश्यकता होती है। वह मअ़सूम (पापरहित) हैं फिरिश्तों की संख्या बहुत है। अल्लाह के अतिरिक्त उनकी संख्या कोई नहीं जानता।

चार फ़िरिश्तों का पद बहुत बड़ा है जिब्राईल, मीकाईल, इस्राफ़ील और इज़्राईल अ़लैहिमुस्लाम। हज़रत जिब्राईल (अ़०) का काम रसूलों के पास वह्य लाना और हज़रत मीकाईल (अ़०) का काम रोज़ी पहुंचाना है। हज़रत इस्राफील (अ़) क़ियामत के रोज़ सूर फूंकेंगे, और हज़रत इज़्राईल (अ़०) जान निकालने पर मुक़र्रर हैं। (लेकिन कोई भी अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकता)

किताबों पर ईमान

अल्लाह तआ़ला ने अपने बाज़ रसूलों पर किताबें उतारीं जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तौरेत, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर ज़बूर, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इन्जील और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर क़ुर्आन मजीद और बाज़ दूसरे अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम पर सहीफ़े उतारे।

क़ुर्आन मजीद की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) का अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद वअ़दा फरमाया और उस वअ़दे के मुताबिक़ वह बड़ी हिफ़ाज़त के साथ मौजूद है और क़ियामत तक महफ़ूज़ रहेगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद इस में एक हर्फ़ की कमी बेशी नहीं हुई। इसकी तर्तीब लौहे महफ़ूज़ के मुताबिक़ है।

रसूलों पर ईमान

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने कुछ खास बन्दों (विशेष भक्तों) को अपनी मख़्लूक़ की हिदायत (सृष्टि को सत्यमार्ग दिखाने) के लिए भेजा। उन पर अल्लाह का कलाम उतरता था और अल्लाह तआ़ला उनके द्वारा अपने आदेश भेजता था। उन ईश प्रिय (मुक़र्रब) और विशेष भक्तों को अल्लाह के नबी और अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) कहते हैं। प्रथम नबी आदम अ़लैहिस्सलाम हैं और अन्तिम नबी व रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं। नबियों की कोई नियुक्त गिन्ती शरीअ़त ने नहीं बताई नबियों और रसूलों के बारे में हमारे अ़क़ीदे यह हैं।

१. वह सब सत्यवादी, सदाचार तथा पाप रहित थे। वह सब अल्लाह की रज़ामन्दी और अल्लाह के प्रिय होने ?में सम्पूर्ण आदर्श थे।

२. इलाही आदेश पहुंचाने में वह कोई कोताही न करते थे दुन्या की कोई शक्ति उनको उनके कर्तव्य से रोक न सकती थी।

३. उन्होंने मुअ़जिज़ात दिखलाए अर्थात उनसे वह काम हुए जो मानव शक्ति से परे हैं। जैसे लाठी का अजगर बन जाना, मुर्दे का जी उठना, पत्थरों और पेड़ों का इन्सानी बोली में बात करना, उंगली के इशारे पर चान्द के दो टुकड़े हो जाना आदि।

४. अल्लाह तआला ने अपने नबियों और रसूलों को आवश्यकतानुसार परोक्ष (ग़ैब) की बातों से भी सूचित किया है परन्तु परोक्ष की समस्त बातों का जानना और हर स्थान पर विद्यमान होना, हर स्थान दृष्टि में होना (अर्थात हाज़िर व नाज़िर होना) यह केवल अल्लाह का गुण (सिफ़त) है। मुअ़जिज़ा जो नबी से ज़ाहिर होता है वह वास्तव में अल्लाह का कार्य है जो नबी के द्वारा प्रकट होता है।

५. जो नबी जिस काल में थे उस काल के लोगों की नजात उस काल के नबी के अनुकारण ही में थी।

६. कोई नबी अपनी नुबुव्वत से कभी पद्च्युत (मअ़जूल) नहीं किये गये।

७. कोई व्यक्ति जो नबी न हो किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता।

८. सब नबियों से उत्तम हमारे नबी करुणा पात्र मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं।

९. आप अल्लाह के नबी हैं और नबियों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले हैं, आप के पश्चात् किसी को नुबुव्वत न मिलेगी। आप ने बहुत से मुअ़जिज़ात दिखलाए। आप की नुबुवत्त समस्त लोकों (सारे जहानों) के लिये हैं। आप को अल्लाह तआ़ला ने सम्पूर्ण दीन प्रदान किया, आपको साक्षात मेराज कराया अर्थात जागते में बुराक़ पर सवार कराके मक्के से बैतुलमुकद्दस फिर वहां से आसमानों पर जहां तक अल्लाह ने चाहा ले गया। जहन्नम के बाज हालात से परिचित कराया गया जन्नत का दृश्य दिखाया गया।

१०. आप के आ जाने के पश्चात् अब किसी और धर्म विधान (शरीअ़त) पर चलने वाला नजात (मोक्ष) नहीं पा सकता। कोई भी बुद्धि रखने वाला व्यस्क इसपद पर नहीं पहुंच सकता कि पैग़म्बर की पैरवी और शरीअ़त की पाबन्दी उसको मुआ़फ़ हो जाए। आपको अल्लाह ने पूर्ण दीन प्रदान किया जिस में जीवन के हर विभाग (व्यापार, खेती, मज़दूरी, नौकरी, लेनदेन, निकाह, तलाक़, रहन सहन आदि) में पथ प्रदर्शन (रहनुमाई) है।

क़ियामत के दिन पर ईमान

हमारा ईमान (विश्वास) है कि एक ऐसा समय आने वाला है जिस में समस्त सृष्टि मिट जाएगी फिर एक समय पश्चात सब जीवित किये जाएंगे और हिसाब किताब होगा कोई पुरस्कारित होगा तो कोई दण्डित। आवागमन की बात बिल्कुल ग़लत है। कोई मरने वाला किसी दूसरेशरीर में नहीं भेजा जाता क़ियामत के सम्बन्ध में निम्नलिखित विश्वास (अक़ाइद) हैं –१. आलमे आख़िरत (प्रलोक) सत्य है। हर मरनेवाला इस लोक (आलम) से उस लोक में चला जाता है।

२. हर मरने वाले से चाहे क़ब्र में दफ़न किया गया हो या जहां भी उसकी रूह रखी गई हो दो फ़िरिश्ते मुन्कर नकीर (जिन को नकीरैन भी कहते है)उससे उसके दीन, उसके रब्ब तथा अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के विषय में प्रश्न करते हैं। सदाचारियों के लिये क़ब्र जन्नत का एक बाग़ तथा कुकर्मियों के लिए दोजख़ का एक गढ़ा बन जाती है। ज़गत–ए–क़ब्र (क़ब्र में भेंचा जाना) यह तो कभी भले लोगों के साथ भी होता है।

३. क़ियामत के आने का निश्चित समय किसी ने नहीं बताया अल्बत्ता उसकी निशानियां बताई हैं। हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तो बहुत विस्तार तथा स्पष्ट निशानियां बताई हैं। इन निशानियों में से बड़ी निशानियां यह हैं –

दज्जाल का निकलना, इमाम महदी का ज़ाहिर होना हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का आसमान से उतरना याजूज माजूज का निकलना दाब्बतुलअर्ज़ का निकलना सूर्य का पश्चिम से उदय होना आदि।

हम अहले सुन्नत का विश्वास है कि इमाम महदी अभी पैदा नहीं हुए हैं यह ग़लत है कि वह किसी ग़ार (गुफा) में छुपे हैं। हमारा अ़कीदा है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सालम ज़िन्दा आसमान पर उठा लिये गये हैं, और क़ियामत के क़रीब वह आसमान से उतारे जाएंगे और शरीअ़ते मुहम्मदीया के अनुसार राज्य करेंगे। वह उस समय भी नुबुव्वत के पद पर होंगे।

परन्तु उनकी नुबुव्वत हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अन्तिम नबी होने के विरुद्ध नहीं कि उनको तो पहले से नुबुव्वत मिल चुकी है। दोनों पर अल्लाह की सलाम्ती हो। याजूज माजूज एक कौम का नाम है जो दो पहाड़ों में बन्द हैं। क़ियामत के क़रीब वह बाहर आकर बड़ा रक्तपात करेंगे। कोई उन का मुकाबला न कर सकेगा फिर आसमानी बला से वह नष्ट हो जाएंगे।

दाब्बतुलअर्ज़ आश्चर्य जनक बनावट का एक पशु है जो इन्सानों की ज़बान में बात करेगा।

४. क़ियामत की सारी निशानियों के बाद अल्लाह के आदेश से हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम सूर (नरसिंघा) फूंकेंगे जिससे बहुत बड़ा भूकंप आए गा और सब कुछ मिट जाएगा सिवए अल्लाह तआ़ला के। फिर एक समय के पश्चात इस्राफील (अ़०) को पुनः जीवित किया जाएगा और इलाही आदेश से पुनः सूर फूंके जाने पर तमाम अगले और पिछले पुनः जीवित होकर ज़मीन पर आ जाएंगे और सब हश्र के मैदान में एकत्र होंगे।

५. किरामन कातिबीन ने हर एक के कर्म लिख रखे हैं वह सब सुरक्षित हैं। उस दिन नेकों के अ़माल नामे (कर्म पत्र) उनके दायें हाथ में और बुरों के अ़मालनामे उनके बायें हाथ में दिये जायेंगे और हिसाब किताब होगा।

६. अ़माल तौलने के लिए एक विशेष प्रकार की तराजू होगी उस तराजू में जिस की नेकी का भार ज़ियादा होगा वह जन्नत में जाएगा और जिसकी बदी का भार का पल्ला भारी होगा वह जहन्नम में जाएगा।

७. जहन्नम पर बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से ज़ियादा तेज़ एक पुल बनाया जाएगा जिसे सिरात का पुल कहते हैं। हिसाब किताब के बाद हर एक को उस पुल पर से गुज़रना होगा। नेक लोग अपने भले कर्मों के अनुसार तेजी से उस पुल से गुज़र जाएंगे और बुरे लोग अपने कर्मानुसार कोई ज़ख़मी होकर कोई कट कर जहन्नम में गिर जाएंगे। (मगर अब मौत किसी को न आएगी)

८. जन्नत और जहन्नम सत्य हैं वह अब भी मौजूद हैं। जन्नत में अच्छे लोगों के लिय उच्च कोटि के बाग स्वच्छ पानी की नहरें, दूध की नहरें, शहद की नहरें और नाना प्रकार की सुखदायी वस्तुएं हैं तथा जहन्नम में बुरे लोगों के लिए दहकती आग और नाना प्रकार के दुखदायी दण्ड हैं। जन्नत में जाने वाला वहां से कभी न निकलेगा इसी प्रकार काफ़िर, मुश्रिक, मुनाफ़िक़ जहन्नम से कभी न निकलेंगे अल्बत्ता ईमान के साथ जिन लोगों के कुफ़्र शिर्क निफ़ाक़ को छोड़ कर कोई और पाप हो गया है तो उनको जहन्नम में सामयिक दण्ड भुगत कर जहन्नम से जन्नत में लाया जाए गा ऐसे कुछ

लोग सजा पूरी होने से पहले ही हुजूर सल्ल० की शफ़ाअ़त से या किसी और संयमी महा पुरुष की शफ़ाअ़त से या केवल अल्लाह की कृपा से जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाखिल कर दिये जाएंगे।

६. जन्नत व जहन्नम के बीच अअ़राफ है वहां के लोग जन्नत वालों और जहन्नम वालों दोनों को देखेंगे और उनसे बातें करेंगे। (बाद में वह भी जन्नत में जाएंगे)

१०. हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तअ़ला क़ियामत के दिन (हश्र के मैदान में) हौज़े कौसर प्रदान करेंगे। उससे आप अपनी उम्मत को पानी पिलाएंगे।

११. हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ियामत के दिन ईमान वाले गुनहगारों की शफ़ाअत करेंगे। आप की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी। उस वक्त आप का उच्च स्थान सब अगलों पिछलों पर जाहिर होगा। आपकी शफ़ाअ़त से पहले कोई भी शफ़ाअत की हिम्मत न करेगा। लेकिन आप की शफ़ाअ़त के बाद फिर दूसरे अंबिया एवं आप की उम्मत के नेक और संयमी लोग भी शफ़ाअ़त करेंगे।

क़ियामत से पहले हुजूर सल्ल० का शफ़ाअ़त कर के कब्र के अज़ाब से बचाना भी साबित है। कियामत के दिन अपकी शफ़ाअ़त तीन प्रकार की होगी।

– बाज़ को दोज़ख़ में जाने से बचाने के लिए।

– बाज़ को दोज़ख़ से निकालने के लिए।

–बाज़ को जन्नत में ऊंचा स्थान दिलाने के लिए।

जन्नत का सब से बड़ा पुरुस्कार वहां अल्लाह तअ़ाला का दीदार (दर्शन) होगा। लोग अल्लाह तअ़ाला को साफ़ साफ़ देखेंगे।

तक़दीर पर ईमान

हर बात और हर अच्छी बुरी चीज़ के लिए अल्लाह तअ़ाला के इल्म में एक अन्दाज़ा मुक़र्रर है और हर चीज के पैदा करने से पहले अल्लाह तअ़ाला उसे जानता है अल्लाह तअ़ाला के इसी इल्म और अन्दाज़े को तक़दीर कहते हैं। कोई अच्छी या बुरी बात अल्लाह तअ़ाला के इल्म और अन्दोज़े से बाहर नहीं।

हम शरीअ़त के मुकल्लफ़ हैं। हम को शरीअ़त के अहकाम बजा लाने में इम्कानी कोशिश करना है। इसी बुन्याद पर हम जो कुछ करेंगे और हमारा जो अंजाम होगा वह अल्लाह के इल्म में हपले ही से है और लिखा हुआ है। तक़दीर पर बहस व मुबाहसे से

सच्चा राही आपको कैसा लगा अवश्य लिखें ।

– संपादक

जा को राखै साइयां
मार सकै ना कोए
बाल न बांका कर सकै
जो जग बैरी होए

संगत ही गुन होत हैं
संगत ही गुन जाएं
बांस फांस और मीस्री
एकहि भाव बिकाएं

✦ लेखकजन पन्ने के एक ओर लिखें और स्पष्ट लिखें।

✦ पाठकगणों के सुझाओं का हम स्वागत करेंगे।

✦ सच्चा राही स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी उसको पढ़ने पर प्रेरित करें।

✦ आप से अनुरोध है कि आप सच्चा राही के खरीदार बढ़ाएं। (धन्यवाद)

(संपादक)

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Dealer :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Dealer in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki,
Chowk, Lucknow- 2260063

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : *आज कल कौमी फसादात होते हैं। एक आदमी दूसरे आदमी को बिना कुसूर तकलीफ़ पहुंचाता है मौक़ा मिलने पर मकान दुकान कारखाना आदि जला देता है और कभी कभी जान से भी मार देता है। जबकि सभी एक बाप (आदम अ़लैहिस्सलाम) की औलाद हैं इस तरह की हरकतें करना कैसा है? इस बारे में इस्लाम की क्या शिक्षा है।*

उत्तर : तमाम इन्सान एक मां बाप अर्थात हज़रत आदम अलै० की औलाद हैं, इस तरह हर इंसान का दूसरे इन्सान पर चाहे उसका सम्बन्ध किसी भी कौम या मज़हब से हो यह हक़ है कि उसका एहतिराम करें, उससे भलाई का तलबगार रहे अपनी तरफ़ से उसे कोई तकलीफ न पहुंचाए, उसको अच्छी हालत में देखे तो खुशी का इज़हार करे उस पर तकलीफ और मुसीबत आ पड़े तो उसकी मदद करे उसके साथ भाई चारगी का मामला करे यह इन्सानियत का तक़ाज़ा है, और इन्सानियत इन्सान का सबसे बड़ा जौहर है किसी हाल में भी खुद को उस जौहर से महरूम करके हैवानियत का रूप अपना लेना इन्सानियत पर बदनुमा दाग़ है फिर ऐसा शख्स इन्सान कहलाने का भी हक़दार नहीं रहता अतः केवल इस रिश्ते से कि वह अल्लाह की मखलूक़ है और हम सब एक मां बाप की औलाद हैं उसके साथ भलाई का मामला करना चाहिए, इस्लाम ने इस विषय में बहुत खुलकर हिदायत दी हैं हर मौके पर इन्सानियत के एहतिराम का और एक दूसरे के साथ भलाई व महब्बत करने का हुक्म दिया है।

"तमाम इन्सान आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बने हुए हैं।"

(तिर्मिज़ी शरीफ़)

दूंसरी जगह फरमाया : हज़रत जरीर इब्ने अब्दुल्लाह (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फरमाया जो शख्स लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह तआ़ला उस पर रहम नहीं फरमाते। (मिश्कात शरीफ़)

इन दोनों हदीसों में इन्सानों को हमदर्दी और अच्छे व्यवहार का सबक़ दिया है और एक दूसरे पर जुल्म व ज्यादती करने से रोका गया है अल्लाह की मख़लूक़ पर रहम करना और उनसे अच्छा सुलूक करना ऐसा अमल है कि अल्लाह भी उस पर रहम फरमाते हैं

हदीस में है।

"अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फरमाया जो लोग इन्सानों पर रहम करते हैं अल्लाह रहमान उन पर रहम करते हैं ऐ लोगो ! ज़मीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

(मिश्कात शरीफ़)

एक और हदीस में है

हज़रत अनस और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फरमाया मखलूक अल्लाह का कुंबा (परिवार) है इसलिए अल्लाह के नज़दीक़ महबूब वह शख्स है जो अल्लाह के कुंबा के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आये। (मिश्कात शरीफ़)

हदीस में है –

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया जो नौजवान किसी बूढ़े शख्स का केवल उसके बुढ़ापे की वजह से एहतिराम करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसके बुढ़ापे के वक्त ऐसे शख्स को पैदा फरमाएगा जो उसकी ताज़ीम करेगा। (मिश्कात शरीफ़)

यह है "इस्लामी शिक्षाएं" जिसने इन्सानियत को उजागर किया है और कौम व मिल्लत के अन्त को मिटा कर केवल इन्सानियत के रिश्ते से एक दूसरे के साथ रहम व मुहब्बत और अच्छे व्यवहार का हुक्म दिया है।

इन्सान तो इन्सान जानवरों पर भी रहम करने से इन्सान को अल्लाह बड़ा बदला अता फरमाते हैं।

एक हदीस में है–

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया एक शख्स रास्ते पर चल रहा था उसको सख्त प्यास लगी एक कुंआ देखा तो वह उसमें उतरा और पानी पीकर कुंए से निकला तो एक कुत्ते को देखा कि ज़बान लटकाए हुए है। प्यास की वजह से मिटटी चाट रहा है उसने कहा प्यास की वजह से इस कुत्ते की भी

(शेष अगले पृष्ठ पर)

आठ साल का बालक

मो० हसन अंसारी

लगभग दो सौ साल पहले की बात है। घटना उत्तर प्रदेश में हरदोई के पास मल्लावां की है। एक आठ साल का बालक अपने पिता के साथ मल्लावां से चलता है। पिता के हाथ में एक पिंजड़ा है जिसमें एक तूती है। खेतों के बीच से गुज़रते हुए, बाप खेत की फसल से काकुन की एक बाली तोड़कर पिंजड़े में डालने लगता है बच्चा मना करता है लेकिन बाप बाली तोड़कर पिंजड़े में डाल लेता है और आगे बढ़ता है। यह देखकर बालक ठिठक कर चलते चलते रूक जाता है। बाप बुलाता है बेटा रूका खड़ा है। बाप हैरान होकर पूछता है, "आओ ! क्यों रूक गये?" बेटा कहता है, "मैं आपके साथ नहीं जाऊंगा।" बाप पूछता है, 'क्यों?' बेटा, "आपने किसान के खेत से काकुन की बाली बिना उससे पूछे तोड़ली। मैं किसान से माफी चाहकर ही आऊंगा। "यह लो बाली खेत में डाल देता हूं।" तब बाप बेटे आगे बढ़ते हैं।

आठ साल के इस बालक का नाम था। 'फ़ज़ले रहमान' जो आगे चलकर मौलाना फ़ज़ले रहमान गंज मुराबादी रह० के नाम से विख्यात हुआ और जिनके दर्शन और सत्संग के लिए प्रतिदिन हज़ारों की संख्या में श्रद्धालु आया करते थे और जिनकी कृपादृष्टि से न जाने कितनों को सद्मार्ग की प्राप्ति हुई।

आज हमें अपने इस गौरवपूर्ण अतीत पर गर्व करने से कहीं अधिक आवश्यकता ऐसे सदगुणों को अपने जीवन में उतारने की है जिससे आपकी सिसकती मानवता का कल्याण हो।

'''इस्मन मोर लबद गयो तो हीं,
सुमिरन तोर बिसर गयो मोहीं।''

(पृष्ठ २८ का शेष)

ऐसी ही हालत हो गई है जैसी मेरी हालत हुई थी तो वह कुंए में उतरा और अपने मोज़े को पानी में भरा फिर मोज़े को अपने दोनों से पकड़ कर बाहर लाया और कुत्ते को पानी पिलाया, अल्लाह ने उसके अमल को पसंद फरमाया और उसकी मगफ़िरत फरमा दी सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या जानवरों पर रहम करने में हम को अज्र मिलता है। रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया हर जानदार पर रहम करने में अज्र है। (बुखारी शरीफ़ भाग – २ पेज. ८८८)

जिस इन्सान में "इंसानियत" का कीमती जौहर होता है दुनिया में उसकी इज़्ज़त होती है लोग उसको इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं दुनिया में लोग उसकी तारीफ करते हैं और इन्तिक़ाल के बाद भी उसको लोग याद करते हैं।

इसलिए ऐसी पाक साफ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए कि उससे किसी को तकलीफ न पहुंचे कि ज़िन्दगी में भी नेकनामी हो और इन्तिक़ाल के बाद भी लोग याद करें।

प्रश्न : मेरी आंख का आपरेशन हुआ है रूकूअ़ व सज्दः के लिए गर्दन झुकाता हूं तो आंखों में बहुत तकलीफ होती है और दर्द होता है आंख सुर्ख हो जाती है ऐसी हालत में रूकूअ़ व सज्दः का मेरे लिए क्या हुकम है ?

उत्तर : अगर हक़ीकत में रुकूअ़ व सज्दः करने पर आंखों में बहुत ज़ियादह तकलीफ़ होती हो या आंखों को नुकसान होता हो तो ऐसी हालत में बैठ कर नमाज़ अदा कर सकता है। रूकूअ़ और सज्दः सर के इशारे से करे सज्दः का इशारा रूकूअ़ से ज्यादा झुका हुआ होना चाहिए।

प्रश्न : मर्द का कफन कितना होता है हमारे यहां लोग चार कपड़े देते हैं जैसे चादर, इजार, कुर्ता और एक लुंगी भी पहना देते हैं। क्या यह सुन्नत है?

उत्तर : सुन्नत केवल तीन ही कपड़े होते हैं चादर, ईजार, और कुर्ता। लोग लुंगी और इजार में धोखा खा जाते हैं इसलिए कि ईजार सर से पैर तक होता है वही लुंगी है। इसलिए एक और बढ़ा देना दुरुस्त नहीं।

प्रश्न : औरत को कितने कपड़ों में कफनाना चाहिए ?

उत्तर : औरतों को पांच कपड़ों में कफनाना सुन्नत है एक कुर्ता, इज़ार, सीनाबन्द, चादर और सर बन्द इज़ार सर से पैर तक होना चाहिए और चादर उससे एक हाथ बड़ी हो और कुर्ता गले से लेकर पैर तक हो लेकिन उसमें कलियां हो न आस्तीनें और सरबन्द तीन हाथ लम्बा है। और सीना बन्द छातियों से लेकर रानों तक चौड़ा और इतना लम्बा हो कि बंध जाए।

प्रश्न : कब्र में कुछ लोग अहदनामा रखते हैं क्या यह दुरुस्त है।

उत्तर : कफन में या क़ब्र में अहद नामा या अपने पीर का सजरा या इसी तरह की कोई चीज़ रखना दुरुस्त नहीं।

अरबी से अनुवाद

शिष्टता की डगर पर

·आसिफ अंज़ार नदवी

नबीकरीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया के एक मरतबा मूसा अ० बनीइस्राईल को समझाने खड़े हुए तो किसी ने पूछा कि दुन्या में कौन सबसे अधिक जानकार है? मूसा अ० ने कहा मैं सबसे ज़ियादा जानता हूं। तब अल्लाह ताला ने उन पर अपना क्रोध जताया इसलिए कि उन्होंने अधिक इल्म वाला होने को अल्लाह की ओर न फेरा था। अल्लाह ने हज़रत मूसा अ० को वहय द्वारा बताया कि मेरा एक बन्दा दो दरियाओं के संगम पर है। वो तुमसे अधिक जानकार है। मूसा अ० ने कहा ऐ पालनहार उनसे मेरी मुलाकात कैसे हो तो उनसे कहा गया कि थैली मेंएक मछली लेकर चलो जहां वो मछली खो जाऐ वहां उनसे तुम्हारी मुलाकात होगी। तो मूसा अ० अपने ख़ादिम यूशअ़ बिनःनून को साथ लेकर चले, उन्होंने थैले में एक मछली भी रख ली, यहां तक कि वो दोनों एक चट्टान के पास पहुंचे और उस पर सर रखकर सो गये। तो मछली थैले से निकली और उसने समुन्द्र की राह ली ये बात मूसा और खादिम के लिए आश्चर्यजनक थी। वो दोनों बकिया रात और दिन चलते रहे जब सुबह हुई तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने ख़ादिम से फरमाया कि हमारा नाश्ता तो लाओ आज के सफर में हमें बड़ी थकान हुई, ... और मूसा अ० को थकान महसूस न हुई जब तक उस जगह को पार न कर लिया जिसका उनको हुक्म दिया गया था। खादिम ने कहा कि लीजिए देखिये ये तो बड़ी अ़जीब बात हुई जब हम उस पत्थर के क़रीब ठहरे थे सो मैं उस मछली के तज़करे को भूल गया (मूसा अ० ने ये हिकायत सुनकर फरमाया) वही वो जगह थी जिसकी हमको तलाश थी। सो उल्टे पांव वापस लौटे, जब वो दोनों उस चट्टान के पास पहुंचे तो क्या देखते हैं कि एक शख़्स चादर में लिपटे हुए सो रहे हैं । तो मूसा अ० ने उनका सलाम किया, हज़रत ख़िज्र अ० ने चौंककर फ़रमाया यहां हमें किस ने सलाम किया। मूसा अ० ने कहा मैं मूसा हूं, ख़िज्र अ० ने पूछा। बनीइस्राईल वाले मूसा । उन्होंने कहा हां ।

मूसा अ० ने कहा कि क्या मैं आपके साथ इसलिए रह सकता हूं ताकि जो लाभदायक ज्ञान आपको अल्लाह ताला की ओर से सिखलाया गया है, उसमें से आप मुझे भी सिखलादें, खिज्र अ० ने कहा आप मेरे साथ रहकर मेरे कामों को बर्दाश्त न कर सकेंगे। उन्होंने कहा ऐ मूसा मैं अल्लाह के ऐसे इल्म को जानता हूं जो उसने मुझे सिखाया है। उसको आप नहीं जानते और आपको अल्लाह की ओर से वो शिक्षा प्रदान कीगई है। जिसको मैं नहीं जानता मूसा अ० ने कहा कि मुझको इन्शाअल्लाह सब्र करने वाला पायेंगे और मैं किसी बात में आपके आदेश के विरुद्ध काम न करूंगा। तो वो दोनों नदी के किनारे–किनारे चलने लगे। उनके पास नांव न थी इतने में उनके पास से एक कश्ती गुजरी तो उन्होंने माझी से बात की के उन दोनों को भी उस पर सवार कर लें। खिज्र अ० को उन्होंने पहचान लिया इसलिए उन दोनों को बिना किराये के सवार कर लिया। जिस वक्त वो नाव में सवार थे उस वक्त एक चिड़िया आई और नांव के किनारे बैठ गई, फिर उसने एक बार या दो बार दरिया में चोंच मार कर पानी पिया तो खिज़ अ० ने कहा ऐ मूसा मेरा और तुम्हारा इल्म अल्लाह के इल्म में से इतना भी कम नहीं कर सकता। जितना कि इस गौरैया के चोंच मारने से इस दरिये का पानी कम हुआ है फिर खिज़ अ० ने नाव में लगे एक तख्ते को उखाड़ दिया मूसा अ० ने कहा इन भले मानुषों ने हमको बगैर भाड़े के अपनी नाव में सवार किया, आपने जानबूझ कर उनकी कश्ती को तोड़ दिया ताकि कश्ती में सवार तमाम लोग डूब जाए। खिज्र अ० ने जवाब दिया क्या मैंने नहीं कहा था कि आप मेरे संग सब्र न कर सकेंगे तब मूसा अ०ने उनसे विनती की और कहा आप मेरी भूल पर मेरी पकड़ न कीजिए और मेरे इस मामले में मुझपर ज़ियादा सख्ती न कीजिए, यह मूसा अ० की पहली भूल थी फिर वो दोनों वहां से चले, रास्ते में एक बच्चा मिला जो दूसरे बालकों के संग खेल रहा था, खिज्र अ० ने उसका सिर पकड़ा और

शरीर से अलग कर दिया, तो मूसा ने कहा आपने एक मासूम जान को बगैर किसी अपराध के कत्ल कर दिया। खिज़्र अ० ने कहा कि क्या मैं ने तुम से न कहा था तुम मेरे साथ रहकर मेरे कामों को बरदाश्त न कर सकोगे फिर वो दोनों वहां से आगे चले। जब उनका गुजर एक गांव वालों पर हुआ तो वहां वालों से खाने को मांगा कि हम मेहमान हैं। लेकिन उन्होंने उनकी मेहमानी करने से इनकार किया। इतने में वहां उनको एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी तो खिज़्र अ० उठे और उसको अपने हाथों से ठीक कर दिया। मूसा अ० ने फिर टोक दिया और कहा अगर आप चाहते तो इस काम की कुछ मजदूरी ही ले लेते। खिज़्र अ० ने कहा ये वक्त हमारे और आपके अलग होने का है।

नबी करीम सल्ल० फरमाते हैं . .. अल्लाह ताला मूसा अ० पर रहम करें काश मूसा अ० और सब्र करते तो उनके बारे में हमें और भी मालूम होता।

तावील

फिर खिज़्र अ० ने उनसब घटनाओं की वजह बतलाई और कहा वह जो कश्ती थी वो चन्द्र निर्धनों की थी वह उसके माध्यम से दरिया में मेहनत–मजदूरी करते थे तो मैने चाहा कि उसमें कुछ ऐब डाल दूं उसका कारण यह है कि उन लोगों से आगे की ओर एक दुष्ट बादशाह था जो तमाम अच्छी कश्तितयों को जबरदस्ती छीन रहा था .....

और रहा लड़का सो उसके मां बाप इमानदार थे, इसलिए हमें निश्चित रूप से डर हुआ कि ये उन दोनों पर ज़ियादती करेगा और कुफ्र का असर डाल देगा पर हमको ये मंजूर हुआ कि बजाय उसके उनका पालनहार, उनको ऐसी संतान दे जो पवित्रता (दीन–धर्म) में उससे अच्छी हो और माता–पिता के संग प्रेम में इससे बढ़ कर हो और रही वो दीवार तो वो दो अन्य बालकों की थी जो इस शहर में रहते थे और उस दीवार के नीचे उनका कुछ माल गड़ा था (जो उनके बाप का था) और उनका बाप (जो मर गया है वो) एक नेक आदमी था सो आप के रब ने अपनी मेहरबानी से चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी (की आयु) को पहुंच जाएं और अपने रब की रहमत से अपना गड़ा माल निकाल लें। (ये सारे काम मैं ने अल्लाह के हुक्म के अनुसार किये हैं इनमें से कोई काम मैंने अपने मन से नहीं किया। यह उन बातों का भेद है जिन पर आप से सब्र न हो सका।

इस घटना के पश्चात् मूसा अ० ने जान लिया कि कोई भी मनुष्य अल्लाह के इल्म को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर सकता उसके इल्म का कुछ भाग किसी के पास होता है और कुछ भाग किसी और के पास और हर जानकार से कोई न कोई अधिक जानकार है।

बनी इस्राईल का हाल मूसा अ० के बाद –

मूसा अ० की मौत हो गई और बनी इस्राईल अल्लाह की ओर से सजा और अपने किये को भुगत्ते रहे वादिये तीह में भटकते रहे और अल्लाह तआला ने उन पर ज़िल्लत और पसती उतार दी और वह अल्लाह की नाराज़गी के मुस्ताहिक बन गए उन्होंने अल्लाह को नाराज किया जिस क़ौम ने नबी और बड़े–बड़े बादशाह पैदा किये और जिनको वो सारी सुविधायें प्राप्त हुई जो उनके जमाने में किसी अन्य कौम को नहीं दी गई। उन्होंने उस अल्लाह को नाराज कर दिया। जिसने उनको फिरऔनियों से नजात दी। जो उनके बुरे अजाब का मजा चखाते थे। उनके लड़कों क्रो जबह कर देते थे और उनकी औरतों को जिन्दा रखते थे।

उन्होंने उस अल्लाह को नाराज किया, जिसने उनके लिए समुन्द्र को दो टुकड़े कर दिया और फिरऔनियों को उसमें डुबे दिया ये सब कुछ वह अपनी आंखों से देख रहे थे। उन्होंने उस अल्लाह को नाराज किया। जिसने उन पर बादलों से .... किया और उन पर मन्न तथा सलवा उतारा।

उन्होंने उस अल्लाह को नाराज किया। जिसने उनके लिए ज़मीन से चश्मे बहाये और उनके खान–पान में बढ़ोत्तरी कर दी और अल्लाह के इन तमाम इनआमात का बदला यह दिया कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इन्कार किया और नाफ़रमानी और जुल्म का रास्ता इख़्तियार किया। उन्होंने अपने नबी मूसा अलैहिस्सलाम को गुस्सा दिलाया जो उन पर उनके मां–बाप से ज़ियादा मेहरबान थे। मूसा अलैहिस्सलाम उन पर उस दूध पिलाने वाली औरत से ज़ियादा मेहरबान थे जो दूध पीते बच्चे पर होते हैं और उस मां से ज़ियादा मेहरबान थे जो यतीम पर होती है। इसी वजह से जब जब बनी इस्राईलियों ने उनको गाली दी उन्होंने उनके लिए दुआ की। जब – जब वो उनपर हंसे वो उनके लिए रोये। और जब–जब उन्होंने बेरूखी की उन्होंने उनपर रहम जाहिर किया। मूसा अलैहिस्सलाम की इसी महब्बत

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

सांस की बदबू का उपचार

हकीम हैदर अब्बास

सांस या मुंह से दुर्गन्ध आना अरूचिकर है और बहुदा मरीज़ को खुद इस बीमारी की जानकारी नहीं हो पाती और उसके पास बैठने वाला इसलिए उसे नहीं बताता कि शायद यह बात नैतिक (अख़लाक़ी) दृष्टिकोण से ठीक नहीं है। नतीजा यह होता है कि मरीज़ अपनी बीमारी से अनभिज्ञ होने के कारण उस का उपचार करने से लापरवाह होता है यहां तक कि एक ओर बीमारी बढ़ती जाती है और दूसरी तरफ़ मरीज़ के सगे सम्बन्धी और साथी उसके पास बैठने से कतराते हैं और जहां तक हो सकता है उसके पास बैठकर खाने पीने से परहेज़ करते हैं। यहां मरीज़ के दोस्तों से प्रार्थना करूंगा कि वह मरीज़ को उसके मर्ज़ से आगाह करें। उससे दूर–दूर रहना उचित नहीं है। उन्हें चाहिए कि मरीज़ को जल्द से ज़ल्द इससे आगाह करें ताकि वह अपना इलाज करा सके।

सांस से बदबू आने के बहुत से कारण हैं। बहुदा दांतों की बीमारी जैसे पायरिया, दांतों में छेद और पुरानी जलन के कारण मुंह से दुर्गन्ध आने लगती है। कभी कभी नज़ला बिगड़ने के बाद हलक़ के गुदूद के अन्दर पीप पड़ जाती है या फिर फेफ़ड़ों की कोई बीमारी या पाचन क्रिया की खराबी सांस या मुंह से दुर्गन्ध आने का कारण बन जाती है।

इसके अतिरिक्त सांस की बदबू का एक विशेष कारण क़ब्ज़ है और बहुदा औरतें इस का शिकार होती हैं। याद रहे कि जब भोजन पच कर आंतों में उतरता है तो आंतों के प्रारम्भ के भागों में उस के पचने वाले मौजूद अंश खून में शामिल हो जाते हैं बाक़ी मल आंतों के आख़िरी भाग में पहुंच कर बाहर निकलने का इंतिज़ार करते हैं। यह मल अगर अधिक देर तक रूका रहे तो इसमें कई प्रकार की बदबूदार हवाएं पैदा होती हैं जो खून में शामिल होती रहती हैं। जब यह खून फेफ़ड़ों में सफ़ाई के लिए पहुंचता है तब यह हवाएं खून से अलग होकर सांस के द्वारा बाहर निकलती हैं और बहुदा यही सांस से बदबू आने का कारण बनती हैं। चुनानचः यदि दांत, हलक़ व नाक आदि के काम ठीक हैं और सीने से सम्बन्धित कोई बीमारी नहीं है तो यही हो सकता है कि मुंह से बदबू आने का कारण पुराना कब्ज़ हो। यह बात याद रखनी चाहिए कि यह ज़रूरी नहीं एक व्यक्ति नियमित रूप से शौचालय जाए तो क़ब्ज़ का मरीज़ नहीं। नियमित रूप से भोजन का तमाम मल चौबीस घंटे तक आंतों से बाहर निकल जाना ज़रूरी है लेकिन देखा गया है कि बाज़ लोगों में अड़तालिस घंट बाद ऐसा होता है। अर्थात जो मल ख़ारिज होता है वह पिछले से पिछले दिन का होता है।

इस बात का फ़ैसला करने के लिए कि मरीज़ निरंतर क़ब्ज़ का शिकार है या नहीं एक आसान जांच है कि साधारण लकड़ी का कोएला बारीक पीस कर एक चाय के चम्मच की मात्रा में पानी के साथ निगल लें। यदि यह चौबीस घंटे तक मल द्वारा न निकले तो समझ लें कि आतों की क्रिया सुस्त है और निरंतर क़ब्ज़ मौजूद हैं। ऐसी दशा में क़ब्ज़ का इलाज करना चाहिए लेकिन निरंतर कब्ज़ का इलाज करते समय दस्तावर दवाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसा करना लाभ के बजाए हानि का कारण हो सकता है। यद्यपि दस्तावर दवाओं के प्रयोग से आंतों की क्रिया तेज़ हो जाती है परन्तु इस अस्थाई तेज़ी के बाद फिर सुस्त पड़कर क़ब्ज़ निरन्तर बना रहता है। निरन्तर कब्ज़ का इलाज आंतों के अमल की स्वाभाविक क्रिया की बहाली और ऐसे आहार का प्रयोग हैं जिससे मल अधिक बने उसके साथ साथ स्वास्थ की बहाली की जाए ताकि आंतें अपनी किया सही ढंग से पूरी कर सकें।

नौजवान लड़कियों और औरतों को चाहिए कि हांड़ी चूल्हे के अतिरिक्त ऐसा व्यायाम करने का प्रति दिन नियम बनाएं जिससे अच्छी तरह पसीना निकले। अधिक उम्र के लोगों को कठोर व्यायाम के स्थान पर दो चार मील पैदल चलने में मन चाहा परिणाम प्राप्त होता है। दूसरी बात यह है कि प्रतिदिन पानी का कम से कम छः सात गिलास ज़रूर पिये जाएं ताकि आंतें की स्वाभाविक नमी की मात्रा में कमी न होने पाए। अधिक पानी पीने से जिल्द और गुर्दे के विकार पैदा करने वाले पदार्थ भी बाहर निकल जाते हैं।

गैस के मरीज़ों को याद रखना

चाहिए कि वह खाना खाने के तुरंतबाद पानी न पीएं बल्कि कुछ अंतराल के बाद पानी पीएं। यह अतंराल पन्द्रह मिनट से घंटे तक भी हो सकता है।

कब्ज़ दूर करने के लिए फल और तरकारी का अधिक प्रयोग कियाजाए जैसे आम, खाजूर, आलूबुख़ारा, ख़रबूजा, इंजीर और दूसरे मौसमी फल आदि।

जो लोग बराबर फलों का प्रयोग नहीं कर सकते वह सब्जियों का प्रयोग कर सकते हैं जैसे गाजर, चुक़न्दर, लौकी कद्दू, सलाद, सरसों का साग आदि।

शहद, ज़ैतून का तेल, बादाम का तेल भी बिना किसी हानि के कब्ज़ दूर करते हैं।

कहंने का तात्पर्य यह है कि उचित व्यायाम, पानी का अधिक प्रयोग, फलों और तरकारियों का भोजन में अधिक शामिल होना निरंतर क़ब्ज़ के खिलाफ़ गारंटी है।

ऐसे मरीज़ जिन के मुंह से बदबू आती हो उन्हें आतों की सफ़ाई और डाक्टर से जांच भी करवाते रहना चाहिए।

दांतों की सफ़ाई भी खाने के पश्चात निरंतर करते रहना चाहिए ताकि भोजन का अंश दांतों के बीच सड़ने न पाए। यदि कोई दांत ख़राब हो गया हो या हिलने लगे तो उसे निकलवा देना चाहिए।

बहुदा सिग्रेट, बीड़ी और हुक्का पीने वालों की सांस से भी बदबू आने लगती है। अतः इन चीजों का प्रयोग न करना चाहिए।

जो बड़ों का आदर नहीं करता और छोटों पर दया नहीं करता वह हमं में से नहीं। (हदीस)

दुरूदो सलाम

मौलाना मु० सानी हसनी

सय्यिदे वुल्दे आदम वह खैरुल अनाम
उस पे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जाहिलीयत में औरत थी इस जानवर
ठोकरें खाती फिरती थी वह दर ब दर
राहो मंज़िल से अपनी थी वह बेख़बर
कोई उसका न था, शाम थी बेसहर
औरतों को दिया हुर्रियत का मक़ाम
उस पे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जिसने कुन्दन बनाया मिसे खाक को
जिसने कुर्बा किया हक़ पे आराम को
सुबह से जिसने बदला हर इक शाम को
सारे आलम में फैलाया इस्लाम को
जिस पे नाज़िल हुआ है खुदा का कलाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

मुअज़िज़ा जिस का अदना था शक़्क़ुल क़मर
जिस की आमद जहां में नसीमे सहर
उसकी आमद न होती जहां में अगर
ठोकरें खाती इन्सानियत दर बदर
ले के आया महब्बत का दिलकश पयाम
उसपे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

(पृष्ठ ३१ का शेष)

ने उनको फिरऔनियें के चंगुल से आज़ाद किया। और उनको मिश्र की क़ैद से निकालकर आजादी और इज़्ज़त की जमीन दी। और गुलामी और बदकिस्मती की जिन्दगी से निकालकर आज़ादों और शरीफ़ों की ज़िन्दगी दी।

इसका बदला उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम को यह दिया कि उनको नाराज किया उनको तकलीफें दीं। उनसे दुश्मनी की उनका मजाक उड़ाया। और उनको कौम का सबसे घटिया आदमी समझा, जब कि मूसा अलेहिस्सलाम अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़ियादा इज़्ज़त वाले थे।

क्या इन जुर्मों की वजह से वो इस सजा इस ज़िल्लत और इस रूसवाई और हमेशा हमेश जंगलो और वनों में भटकते रहने और कभी न कामयाब होने के मुस्तहिक न थे। हां क्यों नहीं। वे इनतमाम सज़ाओं के हकदार थे। बल्कि अपने बूरे करतूतों की वजह से और ज़ियादा सख़्त सज़ा के हकदार थे। और अल्लाह ने उन पर कुछ जुल्म नहीं किया लेकिन उन्होंने अपने ऊपर ख़ुद ही जुल्म किया।

तालीम मेहनत चाहती है

मु० इसहाक़ (अवकाश प्राप्त प्रिंसिपल)

१९३७ का जमाना था हम बिल्कुल इब्तिदाई जमाअ़तों (प्रारम्भिक कक्षाओं) में एक छोटे से गांव के स्कूल में पढ़ते थे। इसी साल इस क़स्बे से महबूब नगर हाई स्कूल से तीन तलबा मैट्रिक के इम्तिहान में शरीक हुए और सिर्फ, एक साहब दर्जा सोम (तृतीय श्रेणी) में कामयाब हो गये। अख़बार में नाम आया सारे गांव में धूम मच गई। सारे गांव के बड़े लोगों की ज़ियाफ़त की गई और हर एक की ज़बान पर सिर्फ़ एक ही जुमला था ।

"तालीम क़िस्मत की बात है।"

१९५३ की बात है एक रेवन्यू इन्सपेक्टर मेरे पास आए और अपने लड़के को इन्जीनियर बनाने के सिलसिले में मश्वरे के तलबगार हुए। यह लड़का मैट्रिक में दो साल फ़ेल होकर तीसरे दर्जे में कामयाब हो चुका था। मेरा मश्वरा था बेहतर है इसे कोई दुकान लगाकर दीजिए। बाप–बेटे दोनों सख्त मायूस हो गये। लड़के की यह ज़िद कि वह इंजीनियर बनकर रहेगा और बाप की यह तमन्ना कि वह अपने लड़के को इन्जीनियर बनाकर ही रहेंगे। कुछ मिन्नत करने पर मैंने उन्हें मश्वरा दिया कि लड़के को हैदराबाद के किसी कालेज में शरीक करा दीजिए माहाना सौ रूपये भेजिये और दूसरा काम दुआ करते रहिये। यह साहबज़ादे इन्टरमीडिएट के दो साल के बाद आखिरी इम्तिहान में मुसलसल पांच साल नाकाम होते रहे। माल के इन्सपेक्टर आखिर हार गये और नौकरी से हटते वक्त उस लड़के को तहसील में किसी ख़िदमत पर मुकर्रर करा सके। मुझसे मुलाकात हुई, शर्मिन्दा हुए कहने लगे "तालीम किस्मत की बात है।"

इन दो मिसालों से हटकर तीसरी मिसाल उन ज़हीन, ग़रीब और मुतवस्सित घरानों के तलबा की है जिनके वालदैन ने कभी अपने लड़कों की तालीम पर तवज्जुह नहीं दी लेकिन उन्होंने खुद ही मेहनत मशक़्क़त करके मंदिरों मस्जिदों के चिरागों के नीचे पढ़ कर तालीम के अअ़ला मिअ़यार (उच्च स्तर) तक पहुंचे। आज भी शहर हैदराबाद और अज़ला में डाक्टर, इन्जीनियर, वकील और प्रोफ़ेसर मिल जाएंगे जिनकी तालीम का रेकार्ड निहायत शानदार रहा है और जिनकी जिद्दोजुहद हैरतनात होगी और यह बात भी क़रीब–क़रीब हर एक के तजुरबे में होगी कि उन्हीं के ख़ानदान के क़रीबी रिश्तेदारान उनकी तालीम के सख़्त मुख़ालिफ़ रहे होंगे। जहां तक वह पस्तहिम्मत कर सकते थे, कर चुके होंगे और यह भी मश्वरा दे चुके होंगे कि ज़ियादा पढ़ने से दिमाग़ पिघल जाता और आदमी पागल हो जाता है और जब उनकी बात नहीं चली तो वह दिल में शर्मिंदा होंगे और बिल आख़िर कहेंगे "तालीम क़िस्मत की बात है" गुज़िश्ता पचास वर्षों से हम यही सुनते आए हैं कि तालीम किस्मत की बात है और आज भी यही ख़याले खाम आम है। इतने वर्षों पहले सचमुच तालीम इतनी फैली हुई नहीं होगी। ग़ुरबत और जिहालत की वजह से एक हज़ार बच्चे स्कूल में शरीक होते तो बस दस पांच मैट्रिक तक पहुंचते। एक ख़याल यह भी था कि बच्चे को जितनी सज़ा मिलती रहेगी उतना ही वह तालीम में उभर आएगा। जो उस्ताद सजा देने में उस्ताद होता उसकी गांव में उतनी ही ज़ियादा क़द्र होती मगर उन असातज़ा ने कितने मासूम तलबा की ज़िन्दगी उजाड़ दी उसकी शायद उनको ख़बर न होगी जो मार के खौफ़ से स्कूल छोड़ बैठें। इन हालात में कोई सख़्तजान तालिबइल्म आगे निकल जाता तो ज़ाहिर है यह किस्मत ही की बात हो सकती थी।

तालीम मंसूबाबन्द कोशिश का नतीजा है। बच्चों की तालीम एक सोचे समझे दूररस, मंसूबे (योजना) का नाम है जो बच्चे की चार पांच साल की उम्र से शुरू होकर पन्द्रह, सोलह साल की उम्र तक जारी रहता है ..... जबकि यह बच्चा मैट्रिक का इम्तहान कामयाब कर लेता है। इस मंसूबे की तकमील के लिए थोड़े बहुत सरमाये की ज़रूरत होती है। सबसे ज़ियादा अहम बात सरमाया नहीं बलिक यह बात है कि आपने अपने बच्चों की तालीम पर कितनी तवज्जुह दी, कितनी दिलचस्पी ली और अपना कितना वक्त उसकी तालीम पर दिया। यही तो असल

सरमाया है जो बच्चे की तालीम के लिए ख़र्च करना ज़रूरी है। कम अज़कम यह मंसूबा बन्द जिद्दोजुहद दस वर्ष या दो पांच साल मंसूबों (पंचवर्षीय योजनाओं) पर निहित है।

यहां तालीमी मंसूबा बन्दी और आम मंसूबा बन्दी के बुन्यादी फर्क को समझ लेना ज़रूरी है। कोई मकान बनाना, डैम, ब्रिज बनाना हो तो यह मंसूबा पहले कागज पर तैयार किया जाता है। काग़ज़ी नक्शे की तकमील के लिए ज़रूरी सरमाया की फ़राहमी और फिर असल काम नक्शे के मुताबिक़ शुरू हो जाता है। आख़िर में यह जांच की जाती है कि जो मंसूबा हमने बनाया था वह कहां तक कामयाब रहा और हमने जो निशान मुकर्रर किये थे किस हद तक किस मुद्दत तक तशफ़्फ़ी बख़्श (सन्तोषजनक) तरीक़े पर हासिल करने में कामयाब रहे आपके बच्चे की तालीमी मंसूबा बन्दी बिल्कुल अलग चीज़ है, वह खुद ज़ीरूह (जीवित) उछलता, कूदता और ज़िन्दगी की सारी तवानाइयों का मर्कज़ होता है।

ज़ाकिर हुसैन तालीमी फ़ारमूला

डा० ज़ाकिर हुसैन हमारे मुल्क के बड़े माहिरे तालीम (शिक्षा विशेषज्ञ) हुए हैं। कोई साठ वर्ष पहले एक कालेज के तलबा से ख़िताब करते हुए उन्हों ने एक तालीमी फारमूला दिया था जो कामयाबी का ज़ामिन है। डर है यह फ़ारमूला यूं ही ज़ाया न हो जाये क्योंकि ज़ाकिर साहब पर जो किताबें अंग्रेज़ी या उर्दू में हैं कहीं पर इस तक़रीर का ज़िक्र नहीं है। फारमूला यह है :

शिद्दत **X** मुद्दत = मक़सद
(लगन **X** अवधि = उद्देश्य)

शिद्दत से मुराद मकसद को हासिल करने का जोश, वलवला, लगन और धुन का पैमाना है। इसको हम यहां १०० दर्जों या डिग्रियों में ज़ाहिर करेंगे।

मुद्दत–उस मक़सद को हासिल करने का जोश या जज़बा कितने दिन बाक़ी रहा क्योंकि मक़सद के हुसूल के लिए जितनी मुद्दत दरकार है यह दिलचस्पी बाक़ी रही या उसमें उतार चढ़ाव आते रहे। क्या यह दिलचस्पी दरकार मुद्दत तक एक ही सतह और डिग्री पर क़ायम रही या नहीं।

मक़सद – अगर हम ग़ौर करें तो मालूम होगा कि हमारी ज़िन्दगी के कई एक मक़सद (उद्देश्य) क़लील मुद्दती (कम अवधि वाले) और तवील मुद्दती (दीर्घ अवधि वाले) इसी फारमूले के तांबे हैं।

मिसाल के तौर पर हम यहां तीन तलबा का फर्ज़ी नतीजे पेश करते हैं जो इस साल मैट्रिक के इम्तिहान में शरीक हुए हैं। उनके नतीजे इस फारमूले के तहत देखिये।

शिद्दत **X** मुद्दत = मक़सद (नतीजा इम्तिहान)

पहला तालिब इल्म – ६० **XX** ३ माह = २७० निशानात (अंक) नाकाम

दूसरा तालिब इल्म – ८० **X** ६ माह = ४८० निशानात – कामयाब

तीसरा तालिब इल्म – ८० **X** १२ माह = ६६० निशानात अंक – दर्जा अव्वल

पहला तालिब इल्म इम्तहान के सिर पर आ जाने से शिद्दत (लगन) का पारा ज़ियादा है लेकिन दरकार मुद्दत बहुत कम है।

दूसेरे तालिब इल्म में कामयाबी का जज़बा ठीक है और मुद्दत भी औसत है दर्जा सोम या दर्जा दोम, बहर हाल कामयाब है।

लेनिक तीसरा तालिब इल्म वह है जिसने शिद्दत के पारे को एक वर्ष तक आला सतह की डिग्री पर क़ायम रखा। इसीलिए दर्जा अव्वल में कामयाब हुआ इसका मक़सद भी ऊंचा था और जज़बा भी बहुत था और तवील मुद्दत (दीर्घ अवधि) तक कायम रहा।

वह आइंदा ज़िन्दगी में कोई मोतबर मुक़ाम हासिल करके रहेगा। इसलिए मिसाल में हम ज़ेहानत के एतबार से तीनों को मसावी (बराबर) समझते हैं। आपके सामने बहुत सी ऐसी मिसालें होंगी हमें यह एक बात पूरे वसूक से कहना है कि अल्लाह तआ़ला किसी की मेहनत बेकार नहीं करता अगर हमने तालीम के लिए नियम तथा लगन से मेहनत की तो हम तालीमी मैदान में सफल हो के रहेंगे। सफलता हमारी किसमत होगी।

क़िसमत का बहाना बना कर मेहनत से जी चुराना बुज़दिली है। कोई अपनी क़िसमत से परिचित नहीं। हम जो मेहनत करें वही हमारी क़िसमत है। हम को अल्लाह ने बताया : "जो लोग हमारी राह में मेहनत करेंगे हम उनके लिए रास्ते खोलेंगे। अतः चाहे दीन का काम हो या दुन्या का हम अ़मले पैहम के मुकल्लफ़ हैं। किसमत तो एक राज़ है, ग़ैब में है, हम उस पर ईमान रखें अमल में कोताही न करें।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

बिना ज्ञान के अल्लाह को पहचाना नहीं जा सकता।

Every
Time You
Come to ISI

Join our ISI
Family Today

दुनिया की सभी उपयोगी सेवाएं तत्काल लाभार्थ उपलब्ध

All Serviceable are absolutely

Free, Faith and Faternity, immediately Placements available for all.
Job & Career Management Oppourtunity genrated Dicision Markers more effectively their life master peace change.

The ISI Group

Dr. Musharraf Husain Rizvi
Managing Director & Chairman

Managed by
Dr. K.G.B. Daughter & Sons

INTERNATIONAL SERVICES INSTITUTE

WORLD PEACE CLINIC
MEED AUTO SIP TRY EDEN REST (MASTER)
WANT TO DIE GO TO HOSPITAL

Allah Gurantee any cure nor we can assure any time limit for a cure we under take treatment because in our past Experience we have found cure and relief in all case by Allah

AL BAIT-UL-MA'MOOR UNIVERSITY

Director
Capt. A.N. Rizvi (M.Navy)
Dr. Azam Rizvi (W.P.M.)
Dr. Shariq Rizvi
Executive Committee
Miss Shareka, Ariz, Sofia, Shaily, Arshi, Sadiq, Sameen, Aqdas, Alqa, Aniqa, Shaney nabi rizvi, Ansar Ahmad Laika

Mrs. - Tasneem Rizvi (GM)
Chief Editor BBSB
Miss- Azmi Rizvi
Secretary
Miss- Rimsha Rizvi
President
Adv. Ashok Kumar Dutt
Gen Secretary

IDEALIZE SYSTEM INDIA & INTERNATION A
UPBOO4, FORUM FOR FAITH AND FRATERNITY
SECRETARY, NATIONAL EX-SERVICEMAN CO-ORDINATION COMMITTEE U.P. SECRETATRIATE UNIT

A 20-6-64, Master Peace, Manwana Khurd, Meerut, U.P. India
E-Mail : Musharrafazam@rediffmail.com, isi_azam@rediffmail.com

इतिहास के पन्नों से

ज़हीरूद्दीन बाबर

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

भारत में मुग़ल काल प्रारम्भ हुआ तो धार्मिक सहनशीलता का एक नया अध्याय शुरू हुआ। बाबर विजयी होकर भारत के सिंहासन पर बैठा। वह धार्मिक उदारता का एक आदर्श था। वह अपने पीछे दया, सहानुभूति, दानशीलता, सहनशीलता साफ दिली की एक परम्परा छोड़ गया जिस को न केवल मुसलमान बल्कि वर्तमान काल के हिन्दू इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं। उसके निम्नलिखित वसीयत (इच्छा पत्र) का वर्णन अब इतिहास में बराबर आता है जो उसने अपने शाहज़ादे हुमायूं को दिया–

"ऐ फर्ज़न्द (पुत्र) ! हिन्दुस्तान की सल्तनत विभिन्न धर्मों से भरी हुई है। खुदा का शुक्र है कि उसने तुम को इसकी बादशाहत प्रदान की। तुम पर आवश्यक है कि तुम अपने दिल से तमाम धार्मिक पक्षपात को मिटा दो और हर धर्म के तरीक़ के अनुसार इंसाफ़ करो। तुम खासकर गाय की कुर्बानी को छोड़ दो। इससे तुम हिन्दुस्तान के लोगों का दिल जीत सकोगे फिर इस देश की प्रजा शाही उपकारों से दबी रहेगी। जो कौम हुकूमत के कानूनों का पालन करती है, उसके मन्दिरों और पूजा स्थलों को ध्वस्त न करो। न्याय और इन्साफ इस प्रकार करो कि बादशाह प्रजा और प्रजा बादशाह से प्रसन्न रहे। इस्लाम का प्रचार अत्याचार की तलवार से अधिक उपकार की तलवार से हो सकता है। शिया और सुन्नियों के मदभेदों की अन्देखी करते रहो। अन्यथा इस्लाम में उनसे कमज़ोरी पैदा होती रहेगी। विभिन्न आस्था रखनेवाली प्रजा को चारों तत्वों के अनुसार इस प्रकार मिलने दो जिस प्रकार इंसानी जिस्म मिला रहता है ताकि सलतनत (राज्य) का ढांचा विरोधों से पाक रहे। तुज़्के तेमूरी का बराबर अध्ययन करते रहो ताकि सल्तनत की प्रबन्ध व्यवस्था का अनुभव प्राप्त हो।"

इस नसीहत से भरे हुए पत्र को डा० राजेन्द्र प्रसाद (प्रथम राष्टपति) ने अपनी पुस्तक इंडिया डिवाइडेड, जनरल आफ़ दी यू०पी हिटलिस्टि सोसाइटी १६३६ में नकल किया है। बाबर ने राना सांग के खिलाफ़ बड़ा रक्त पात पूर्ण युद्ध किया परन्तु उसके खान्दान वालों के साथ बड़ा सदभाव पूर्ण व्यवहार किया। वह खुद बयान करता है।

"मंगल चाहदवीं तारीख राना सांगा के दूसरे बेटे विक्रमाजीत के सरदार के पास से आज्ञा पालन और सेवा का सन्देश आया था। और सत्तर लाख की सम्पत्ति प्रदान करने की प्रार्थना की थी। उनसे कह दिया गया था कि यदि रनथंबौर का क़िला ख़ाली कर दे तो उसकी इच्छानुसार जागीर बहाल कर दी जाएगी। यह बात तय करके उसके आदमियों को विदा कर दिया गया था और चूंकि मैं गवालियार जा रहा था इसलिए कह दिया था कि फ़ुलां दिन गुवालियार में हाजिर हो। यह लोग निश्चित समय से कई दिन पीछे आए। अस्वाक पदमावती का रिश्तेदार है इसलिए यह हाल दोनों मां बेटों से बयान किया। दोनों ने अस्वाक की बात से सहमत होकर फ़रमाबर्दारी और शर्तें स्वीकार कर लीं। राना सांगा के पास महमूद (ख़िलजी) का एक ताज, कुलाह, सोने का कमरबन्द था, जब उसने सुलतान महमूद को पकड़ा था तो यह चीज़ें लेकर छोड़ दिया था। वह ताज आदि विक्रमाजीत के पास था, उसके बड़े भाई ने जो अब अपने बाप राना सांगा का उत्तराधिकारी (जानशीन) है, और चित्तौड़ पर क़ाबिज़ है, इन चीज़ों को भेजने और रनथंबौर के बदले में बयाना लेने को कहला भेजा। मैंने यह बयाना देना तो स्वीकार न किय परन्तु शम्शाबाद बदले में देना स्वीकार कर लिया। उसी दिन विक्रमाजीत के दो आदमियों को खिलअ़त देकर विदा किया और कह दिया कि नौ दिन में बयाना आएगा।"

(तुज़्केबाबरी)

इसी के बाद बाबर गुवालियार पहुंचा तो वहां के मन्दिरों की सैर के लिए गया। उस का वर्णन रोचक ढंग से करता है –

"मैंने गुवालियार के बुत खाना (मन्दिर) की सैर की। बुतखाने में बाज़ दोहरे और बाज़ तेहरे दालान हैं, परन्तु अगली शैली के नीचे नीचे उनके पत्थरों में मूर्तियां गढ़ी हुई हैं मन्दिरों के बाज़ भाग मदरसों की तरह बने हुए हैं।

केन्द्र में एक बड़ा गुम्बद है जिसकी कोठरियां ऐसी हैं जैसे मदरसों की कोठरियों होती हैं। हर कोठरी के ऊपर पत्थर की गढ़ी हुई बुर्जियां हैं कोठरियों में नीचे की तरफ़ के पत्थरों में मूर्तियां तराशी हुई हैं। (तुज्केबाबरी)

वह मूर्ति तोड़ने वाला होने के बजाए जिस तरह मज़े लेले कर इस मन्दिर का वर्णन करता है उससे अन्दाज़ा होता है कि वह तय कर चुका था कि शासन करने में उसको इस प्रकार के सदभाव को प्रकट करना आवश्यक है।

बाबर के सदभावपूर्ण तबीअ़त से वर्तमान युग के हिन्दू इतिहासकार भी काफी प्रभावित हैं जैसे राम प्रसाद त्रिपाठी लिखते हैं कि बाबर अपने धर्म का तो बड़ा सम्मान करता, उलमा और फुक़हा (शरई क़ानून विशेषज्ञ) की बड़ी इज़्ज़त करता परन्तु वह अपने राजनीतिक मामिलों में उनको दखल देने नहीं देता और न किसी सम्प्रदायिक सलाह को स्वीकार करता। इसके दरबार या निजी बैठक में धार्मिक या सम्प्रदायिक विरोध उत्पन्न नहीं होते। मुगल सल्तनत की शानोशौकत केवल उसकी फौजी शक्ति में न थी बल्कि उसकी शौकत ग़ैर मुस्लिम प्रजा और मुख्यतः राजपूतों के साथ उसके धार्मिक सद्भाव में भी थी। उसके ज़माने में कल्चर को जो उन्नति मिली, वह भी एक शानदार कारनामा है।

उसने एक ऐसी सल्तनत कायम की जिसकी राजनीति में धार्मिक और वर्गीय विरोध का कोई दखल न था।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

अल्लाह से मांगो पाओगे।

एक सांस और

डॉ०–सूरज मृदुल

आज आदमी जानता है कि
वह ग़लत कर रहा है
फिर भी ——— आदमी
आदमी को रौन्द रहा है
सूखा लिक–लिक करता शरीर
एक सांसा ओर – एक सांस और
की गति को झेलता
कभी उसकी सांस उखड़ रही होती
तो कभी अपने पांव के नीचे से
ज़मीन खिसक रही होती
फिर भी न जाने
किस निर्बोध संघर्ष के चलते
आदमी –
अपने आपको नोच रहा है।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

सिरदर्द में ताज़ा लौकी का गूदा पीस कर ललाट पर लगाने से दर्द जाता रहेगा। हलकी आंच पर पकाई हुई लौकी का सालन एक प्रकृतिक टानिक है। पुराने कब्ज़ के मरीज़ों, गर्म मिज़ाज वाले व्यक्तियों और मेहनत करने वाले मजदूरों के लिए लौकी और चने की दाल का पकवान बेहतरीन और ताक़त देने वाला आहार है। फुंसियों पर लौकी का लेप लगाने से फुंसियां गायब हो जाती हैं। बिच्छू के डंक मारे पर लेप कर देने से और उसका रस पिला देने से जहर का असर समाप्त हो जाता है।

तात्पर्य यह है कि अल्लाह तआ़ला ने इस तरकारी में बहुत गुण और तासीर रखी हैं जिन से लाभ उठाया जा सकता है।

गर्मी के ऋतु में लौकी के लच्छे तेल में तल कर शकर के शीरे में डाल दो स्वादिष्ट मिठाई तैयार हो गयी।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

0522-508982
Mohd. Miyan
Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के जेवरात की दुकान

0522-508982
अनस
मैरेज हाल
बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।
कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

नबी–ए–करीम सल्ल० की पसन्दीदः तरकारी

लौकी और उसकी विशेषता

अमीनुद्दीन खां

कहा जाता है कि नबी–ए–करीम हुजूर सल्ल० की तरकारियों में लौकी बहुत पसन्द थी। हज़रत अनस फ़रमाते हैं कि एक दरज़ी ने आप सल्ल० को दावत दी। जौ की रोटी और शोरबा पेश किया जिस में लौकी और शुस्क गोश्त के टुकड़े थे। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्याले के किनारों से लौकी खोज कर खा रहे थे। मैं उस रोज़ के बाद से हमेशा लौकी को पसन्द करने लगा । (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हज़रत जाबिर बिन तारिक़ फरमाते हैं कि हुजूर नबी–ए–करीम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ तो देखा कि लौकी के छोटे–छोटे टुकड़े किये जा रहे हैं। मैंने पूछा कि इन का क्या बनेगा । फरमाया "सालन में वृद्धि की जाएगी।" (तिर्मिज़ी शरीफ)

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया कि "जब तुम हांड़ी पकाया करो तो उसमें लौकी अधिक डाल दिया करो क्योंकि वह दिल को मजबूत करती है" लौकी खाने से बुद्धि बढ़ती है। लौकी सीने को साफ़ करती और दिल को शक्ति प्रदान करती है।

यदि लौकी का पानी निचोड़ कर कुल्ली की जाए तो गर्मी से होने वाले सिर दर्द को बहुत लाभ होता है यदि सुखा कर जलाया जाए और सिरका में घोल कर सफ़ेद दाग पर लगाया जाय तो सफ़ेद दाग को दूर करती है। यह बुखार के लिए सबसे अच्छा भोजन है। खांसी में भी लाभ प्रद है। सिरका में मिलाकर इसको सिर पर लेप किया जाए या नाक में टपकाया जाए तो गर्मी से होने वाले सिरदर्द में लाभ होता है। शरीर की गर्मी दूर करने के लिए लौकी का पानी निकाल कर मीठे तेल में चार भाग पानी और एक भाग तेल के हिसाब से मिला कर धीमी आंच पर पकाया जाए फिर प्रयोग में लाया जाए। कुर्तुबी का बयान है कि लौकी जन्नत का फल है। लौकी खाने से आंख की रोशनी बढ़ती है। अगर सुखाकर घर में धूनी दी जाए तो मक्खियां भाग जाती हैं।

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि लौकी मसूर की दाल के साथ खाना दिल को नर्म करता है। लौकी अक्ल को तेज़ करती और दिमाग़ को शक्ति देती है। इसका मिजाज़ सर्द होता है। तपेदिक़ के मरीज़ के लिए इससे अच्छा कोई आहार नहीं। अधिक लौकी खाने वाला सिल के रोग से बचा रहता है। इसके बीजों का तेल दिमाग की खुशकी दूर करके नींद लाता है। खून, थूकने, पित के बुखार और शरीर के आन्तरिक अंग के खून बहने और दिक़ व सिल की बीमारी में भुल भुलाई हुई लौकी का पानी पिलाना बड़ा लाभकारी है। कहा जाता है कि वह लौकी ही का बेलदार पेड़ था जिसकी छाया में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से निकल कर झोपड़ी बनाकर रहने लगे थे। एक बुजुर्ग की महफिल में किसी ने कह दिया कि "यह भी कोई सब्जी है।" उस पर वह बुजुर्ग बहुत नाराज़ हुए और तौबा करने और ईमान को ताज़ा करने का उपदेश दिया। मेरे मिलने वाले एक पंडित जी थे, कालेज के प्रधानाचार्य भी थे। "लौकी और शहद" के बहुत ही रसिया थे। वह बतलाते कि लौकी की खेती वह घर और स्कूल दोनों जगह करते हैं और हर प्रकार से उसका प्रयोग करते हैं। जैसे सब्ज़ी के रूप में मुरब्बा, खीर, हलवा, पकौड़ी, बिरयानी, लच्छा आदि बनाकर। इसी प्रकार शहद के बारे में बताते कि मैं इस पर ध्यान नही देता कि असली है कि नकली बस शहद समझ कर खरीद लेता हूं या प्राप्त करता हूं और इन दोनों चीज़ की खूब प्रशंसा करते। यह कहना अनुचित होगा कि यह दोनों चीज़ें उनके अच्छे स्वास्थ का आधार थीं।

कहते हैं कि गर्भ के पहले और गर्भ की अवध में लौकी का प्रयोग अधिक करने से गर्भपात होने की शिकायत दूर हो जाती है। जिन औरतों के यहां जियादा लड़कियां पैदा होती हैं यदि गर्भ ठहरने के एक मास बाद से कच्ची लौकी बीज समेत मिस्री के साथ खाना शुरू कर दें और तीसरे महीने के अंत तक जारी रखें लड़का पैदा होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

इसराईल ने अमरीका से चार अरब डालर की और फौजी सहायता की मांग की है जबकि अमरीका ने इसराईल को नये पैट्रियाट मीज़ाइल देने का प्रस्ताव किया है जो दुश्मन से फायर किये गये मीज़ाइलों को रास्ते में ही रोक कर नष्ट करने की क्षमता रखते हैं। इसराईल ने अमरीका की इराक़ के विरुद्ध युद्ध की कार्रवाई के कारण चार अरब डालर की आवश्यकता है जबकि इसे और दस अरब डालर उधार की गारंटी भी दी जाए ताकि वह अपनी आर्थिक दशा सुधार सके। स्पष्ट है कि यह अमरीका इसराईल को वार्षिक २१ मिलयन डालर की सहायता देता है और यह नई सहायता इस सहायता के अतिरिक्त होगी।

आयरलैण्ड में इस्लाम की पवित्र पुस्तक कुर्आन का आएरिश भाषा में अनुवाद किया जाएगा ताकि आएरिश भाषा बोलने वालों और मुसलमान समुदाय को एक दूसरे से निकट लाया जा सके। इनसे दोनों सभ्यताओं से सम्बन्ध रखने वाले आएरिश भाषा बोलने वालों को लाभ होगा। आएरिश बोलने वालों में काफ़ी मुसलमान हैं। यह वह लोग हैं जिनका जन्म पालन पोषण यहां हुआ है और उन्होंने स्कूल में आएरिश भाषा सीखी। ऐसे लोग भी कुर्आन को अपनी भाषा में पढ़ सकेंगे जिन की इस्लाम में रूचि है। आएरलैण्ड में धार्मिक अल्पसंख्यक लोगों में से मुसलमानों की संख्या सब से अधिकांश लोग आएरलैण्ड में रहते हैं।

जंग समाचार पत्र के अनुसार अमरीका और ब्रिटेन ने जो सभ्यता, सज्जनता और मानवी आदर के द्रावेदार हैं, इराक में आग और खून की होली खेली है। हलाकू और चंगेज की मारकाट इस के सामने तुच्छ होकर रह गयी है। इंसानी इतिहास में इस सबसे भयंकर फौजी कार्रवाई का सिरे से कोई भी कानूनी और नैतिक तर्क भी संसार के सामने पेश नहीं किया जा सका।

अमरीका और ब्रिटेन के इस व्यवहार से उनका वास्तविक चरित्र, उनके मुख्य उद्देश्य और संकल्प पूरी तरह सामने आते हैं। यद्यपि दावे तो वह यह करते रहे हैं कि वह अपने साधनों को मानवी समस्याओं के हल और इंसानी जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रयोग कर रहे हैं लेकिन सच्चाई यह है कि उनका मुख्य उद्देश्य धन और ताक़त का संसार पर सिक्का जमाना है। साइंस और टेक्नॉलोजी की उन्नति द्वारा व्यापक रूप में नरसंहार व बरबादी की क्षमता प्राप्त करते रहना है। अब इन शक्तियों के यह सभी दावे ग़लत साबित हो गए हैं कि वह इराक़ी जनसाधारण की भलाई चाहने वाले हैं और उन्हें अत्याचारी शासन से स्वतंत्रता दिला कर प्रजातंत्र के वर्दान से परिचित करना चाहते हैं। इसके बजाए सिद्ध यह हुआ है कि उनका यह युद्ध केवल सामराजी और बल प्रयोग के संकल्पों को जाहिर करता है जिस का बहुत से उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह है कि वह इराक पर अधिकार के बाद पूरे मध्यपूर्व ऐशिया पर अपने पूरे नियंत्रण का मार्ग खोलना चाहते हैं। दूसरे यह कि वह इराक़ के अन्य साधनों के साथ –साथ उसके तेल के भण्डारों पर अधिकार करना चाहते हैं। अमरीकी नेताओं की प्रेस ब्रीफ़िंग में तेल के कुओं की सुरक्षा की आवश्यकता का जिस तीव्रता से वर्णन होता रहा है और अन्धाधुंध बम्बारी से इंसानी जानों की हलाकत की घटनाओं को जिस तरह सरसरी अन्दाज़ में लिया गया उससे यह बात पूरी तरह स्पष्ट है कि उन्हें इंसानी जानों के नष्ट होने का तो कोई दुख नही लेकिन सबसे अधिक चिंता तेल की है। इसके साथ साथ इस पूरे अभ्यास का तीसरा प्रमुख उद्देश्य अमरीका और ब्रिटेन के कारखानों में तैयार विनाषकारी हथियारों की परीक्षा दिखाई देता है। अमरीका और ब्रिटेन के घोषित ऐजेडे के अनुसार सम्भव यही है कि उनका अगला निशाना भी कोई मुसलमान देश ही होगा। जहां तक प्रजातंत्र की स्थापना और जन साधारण की भलाई की बातें हैं तो ऐसी ही बातें अफ़ग़ानिस्तान पर आक्रमण के समय भी कही गई थीं और मुस्लिम समुदाय साधारणतः उनकी सच्चाई की गवाही दिया करते थे लेकिन अफ़ग़ानिस्तान में ऐसा कोई वादा अब तक पूरा नहीं हुआ, बदनामी, अव्यवस्था ने आज भी वहां डेरा डाल रखा है और नवनिर्माण का कार्य अव्यवस्था का शिकार है और समय ने सिद्ध कर दिया कि वही लोग सही थे जो इन दावों और व ादों को खुला धोखा करार देते थे। अब यही ड्रामा इराक़ में दोहराने के पश्चात मुस्लिम दुन्या को और धोखा खाने की कोई गुंजाइश नहीं।